SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

चेतना

37वां अंक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना- 800001

हिंदी पत्रिका 'चेतना' के 36वें अंक का विमोचन

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अर्द्धवार्षिक हिंदी पत्रिका

चेतना

अक्तूबर, 2025 से मार्च, 2026

37वां अंक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना
महालेखाकार भवन
वीरचंद पटेल मार्ग, पटना - 800 001

चेतना के इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाएँ लेखकों/रचनाकारों के अनुसार उनकी मौलिक एवं अप्रकाशित हैं तथा इसमें दिए गए विचार/मन्तव्य उनके अपने हैं। इससे किसी प्रकार की सहमति/असहमति संपादक मण्डल की नहीं है।

स्वत्वाधिकार : प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना
प्रकाशन : चेतना
प्रकाशक : कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना,
महालेखाकार भवन, वीरचंद पटेल मार्ग, पटना-800 001
37वां अंक : अक्तूबर, 2025 से मार्च, 2026
मुद्रक : पटनेश्वरी प्रिन्टर

चेतना परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री संतोष कुमार

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) बिहार, पटना

संरक्षक

श्री ओंकार

वरिष्ठ उपमहालेखाकार

श्री देवेन्द्र प्रताप श्रीवास्तव

उपमहालेखाकार

परामर्शदातृ समिति

श्री अरविंद प्रसाद सिंह

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

श्री श्रीराम पाण्डेय

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

संपादक

श्री सुनील कुमार

सहायक निदेशक (राजभाषा)

उप संपादक

श्री सन्नी कुमार

कनिष्ठ अनुवादक

संपादन सहयोग

श्री उदयभान विश्वकर्मा

कनिष्ठ अनुवादक

श्री धीरज कुमार

वरिष्ठ लेखाकार

मुद्रण कार्य

पटनेश्वरी प्रिन्टर

प्रधान महालेखाकार का संदेश

पत्रिका "चेतना" के 37वें अंक के प्रकाशन पर अपनी शुभकामनाएँ प्रकट करता हूँ। यह अंक कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रयोग और विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में उभरकर सामने आया है।

इस देश की प्रमुख भाषाओं में हिंदी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है तथा यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न अंग है। सरकारी कार्यों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने की दिशा में निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं और इसके लिए सभी का योगदान अत्यंत आवश्यक है। इस पत्रिका के माध्यम से हम न केवल अपने कार्यों को सृजनात्मक रूप से प्रस्तुत कर सकते हैं, बल्कि हिंदी के प्रचार–प्रसार में भी अपना योगदान दे सकते हैं।

कार्यालय में राजभाषा के कार्यों को सशक्त करने के लिए सराहनीय प्रयास किए जा रहे हैं। हमें यह सुनिश्चित करना है कि हिंदी भाषा का अधिकाधिक उपयोग न केवल कार्यस्थल पर अपितु हमारे दैनिक जीवन में भी हो। पत्रिका "चेतना" इस दिशा में एक महत्वपूर्ण साधन बन सकती है, जिससे हम अपनी कार्यशैली, विचार और अनुभव साझा कर सकते हैं।

पत्रिका प्रकाशन में सहभागी सभी कार्मिकों को बधाई।

(संतोष कुमार)

वरिष्ठ उपमहालेखाकार का संदेश

यह अपार हर्ष का विषय है कि कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "चेतना" के 37वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे कार्यालय की सृजनशील ऊर्जा का प्रतीक है, बल्कि राजभाषा हिंदी के संवर्धन और उसके प्रभावी अनुपालन के प्रति हमारी निरंतर प्रतिबद्धता का भी द्योतक है। आज के समय में जब दुनिया डिजिटल हो रही है, राजभाषा हिंदी का महत्व और बढ़ गया है।

पत्रिका "चेतना" के इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाएँ कार्यालय के कार्मिकों की अभिव्यक्ति कौशल एवं संगठनात्मक संस्कारों का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। इस पत्रिका द्वारा कार्यालय में हिंदी में कामकाजी प्रक्रियाओं को बढ़ावा दिया गया है तथा विभागीय बैठकों, दस्तावेजों एवं पत्राचार में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित किया गया है।

यह हम सभी का कर्तव्य है कि राजभाषा हिंदी को न केवल हमारे कार्यों में, बल्कि अपनी सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में भी प्रमुख स्थान दें। रचनाकारों, संपादक मंडली के साथ–ही इस अंक के प्रकाशन से संबंधित सभी कार्मिकों को हार्दिक बधाई। आशा है कि पत्रिका "चेतना" का यह अंक पाठकों को राजभाषा हिंदी की ओर आकर्षित करने में सहायक सिद्ध होगा।

धन्यवाद।

ओंकार

(ओंकार)

उपमहालेखाकार का संदेश

पत्रिका "चेतना" कार्यालय के कार्मिकों की प्रतिबद्धता, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व की भावना का प्रतीक है। यह पत्रिका केवल विभागीय गतिविधियों और उपलब्धियों का संकलन नहीं, अपितु हमारे सामूहिक प्रयासों, अनुभवों और नवाचारों का दर्पण भी है।

सरकारी सेवा का मूल उद्देश्य जनहित और सुशासन की स्थापना है। ऐसे में सभी का दायित्व है कि हम अपने कार्यों में ईमानदारी, संवेदनशीलता और दक्षता का समावेश करें। मुझे विश्वास है कि पत्रिका "चेतना"का यह अंक राजभाषा हिंदी से संबंधित कर्तव्यों के प्रति कार्मिकों को अधिक जागरूक बनाएगी तथा कार्यालय की कार्य संस्कृति को और अधिक सशक्त करेगी।

यह पत्रिका कर्मचारियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति का मंच बने, पारस्परिक संवाद को प्रोत्साहित करे और नवाचार की भावना को आगे बढ़ाए, यही मेरी कामना है।

मैं संपादकीय टीम एवं सभी रचनाकारों को इस सराहनीय प्रयास हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। आशा है कि पत्रिका "चेतना" निरंतर प्रगति–पथ पर अग्रसर रहते हुए नए आयाम स्थापित करेगी।

(देवेन्द्र प्रताप श्रीवास्तव)

टिप्पणियां हिंदी में लिखिए।

प्रारूप हिंदी में तैयार कीजिए।

शब्दों के लिए अटकिए नहीं।

अशुद्धियों से घबराइए नहीं।

अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए।

संपादकीय

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका "चेतना" के 37वें अंक के प्रकाशन पर अत्यंत गर्व की अनुभूति हो रही है। यह केवल एक पत्रिका का प्रकाशन नहीं, अपितु राजभाषा हिंदी के प्रति समर्पण, संवेदनशीलता और निरंतर प्रयासों का जीवंत प्रमाण है। प्रत्येक अंक के साथ हमारा उद्देश्य रहा है कि हिंदी को कार्यालयीन कार्यप्रणाली में अधिक प्रभावी, सहज और सशक्त माध्यम के रूप में स्थापित किया जाए।

राजभाषा हिंदी संवाद के माध्यम के साथ–ही हमारी सांस्कृतिक अस्मिता, राष्ट्रीय एकता और प्रशासनिक पारदर्शिता की आधारशिला है। कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग न केवल संवैधानिक दायित्व है, बल्कि जनसामान्य से जुड़ने का सशक्त माध्यम भी है। जब शासन की भाषा जनभाषा के निकट होती है, तब प्रशासन अधिक संवेदनशील और उत्तरदायी बनता है।

डिजिटल युग में तकनीक और भाषा का समन्वय अत्यंत आवश्यक है। आज ई–ऑफिस, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और विभिन्न सॉफ्टवेयर प्लेटफॉर्म पर हिंदी में कार्य करना पहले की अपेक्षा अधिक सुगम हो गया है। हमें इन साधनों के माध्यम से प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के उपयोग को और अधिक समावेशी एवं सशक्त बनाने हेतु प्रयासरत रहना है।

अंत में, पत्रिका "चेतना" के इस अंक के प्रकाशन में सहयोग देने वाले अतिथि रचनाकारों के साथ कार्यालय के सभी रचनाकारों एवं संपादन कार्य से जुड़े समस्त सहयोगियों के प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

सुनील कुमार

संपादक

महालेखाकार भवन

बिहार, पटना

आपके पत्र

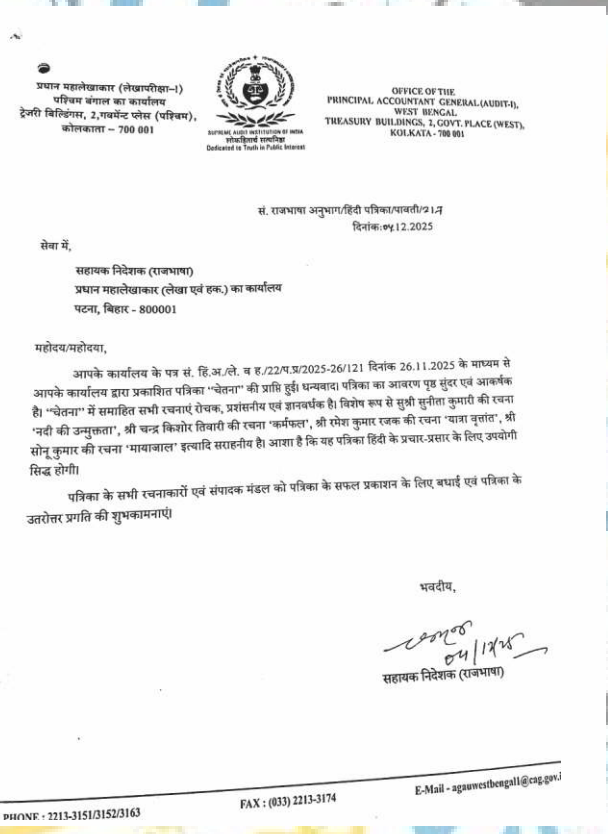

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–I)
पश्चिम बंगाल का कार्यालय
ट्रेजरी बिल्डिंगस, 2,गवर्मेन्ट प्लेस (पश्चिम),
कोलकाता – 700 001

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I),
WEST BENGAL
TREASURY BUILDINGS, 2, GOVT. PLACE (WEST),
KOLKATA - 700 001

सं. राजभाषा अनुभाग/हिंदी पत्रिका/पावती/२१२
दिनांक:०५.12.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.) का कार्यालय
पटना, बिहार - 800001

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय के पत्र सं. हिं.अ./ले. व ह./22/प.प्र/2025-26/121 दिनांक 26.11.2025 के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "चेतना" की प्राप्ति हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ सुंदर एवं आकर्षक है। "चेतना" में समाहित सभी रचनाएं रोचक, प्रशंसनीय एवं ज्ञानवर्धक है। विशेष रूप से सुश्री सुनीता कुमारी की रचना 'नदी की उन्मुक्तता', श्री चन्द्र किशोर तिवारी की रचना 'कर्मफल', श्री रमेश कुमार रजक की रचना 'यात्रा वृत्तांत', श्री सोनू कुमार की रचना 'मायाजाल' इत्यादि सराहनीय है। आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका के उतरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएं।

भवदीय,

०५/१२/२५

सहायक निदेशक (राजभाषा)

PHONE : 2213-3151/3152/3163 FAX : (033) 2213-3174 E-Mail - agauwestbengal1@cag.gov.i

---

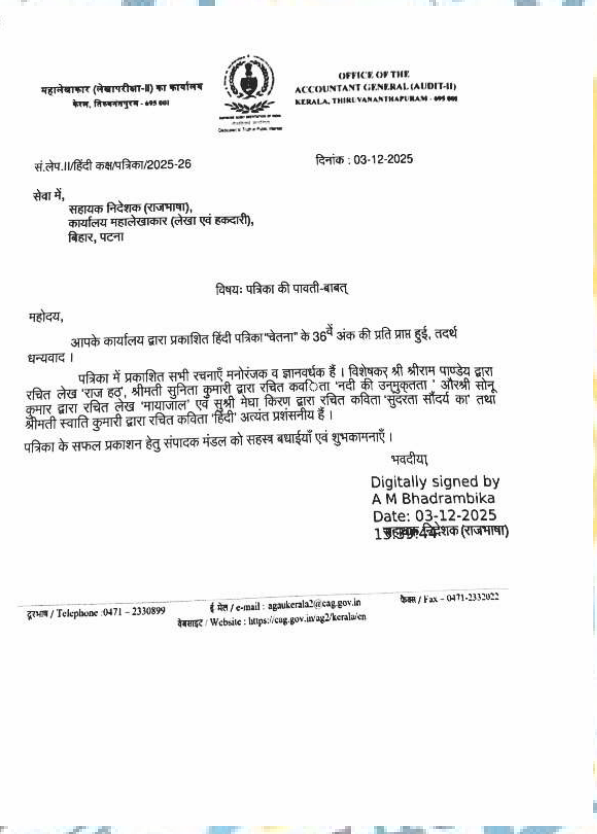

महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय
केरल, तिरुवनंतपुरम - 695 001

OFFICE OF THE
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-II)
KERALA, THIRUVANANTHAPURAM - 695 001

सं.लेप.II/हिंदी कक्ष/पत्रिका/2025-26 दिनांक : 03-12-2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
बिहार, पटना

विषयः पत्रिका की पावती-बाबत्

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "चेतना" के 36वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद ।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ मनोरंजक व ज्ञानवर्धक हैं । विशेषकर श्री श्रीराम पाण्डेय द्वारा रचित लेख 'राज हठ', श्रीमती सुनिता कुमारी द्वारा रचित कविता 'नदी की उन्मुक्तता ' औरश्री सोनू कुमार द्वारा रचित लेख 'मायाजाल' एवं सुश्री मेघा किरण द्वारा रचित कविता 'सुंदरता सौंदर्य का' तथा श्रीमती स्वाति कुमारी द्वारा रचित कविता 'हिंदी' अत्यंत प्रशंसनीय हैं ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को सहस्त्र बधाईयाँ एवं शुभकामनाएँ ।

भवदीया

Digitally signed by
A M Bhadrambika
Date: 03-12-2025
सहायक निदेशक (राजभाषा)

दूरभाष / Telephone :0471 – 2330899 ई मेल / e-mail : agaukerala2@cag.gov.in फैक्स / Fax – 0471-2332022
वेबसाइट / Website : https://cag.gov.in/ag2/kerala/en

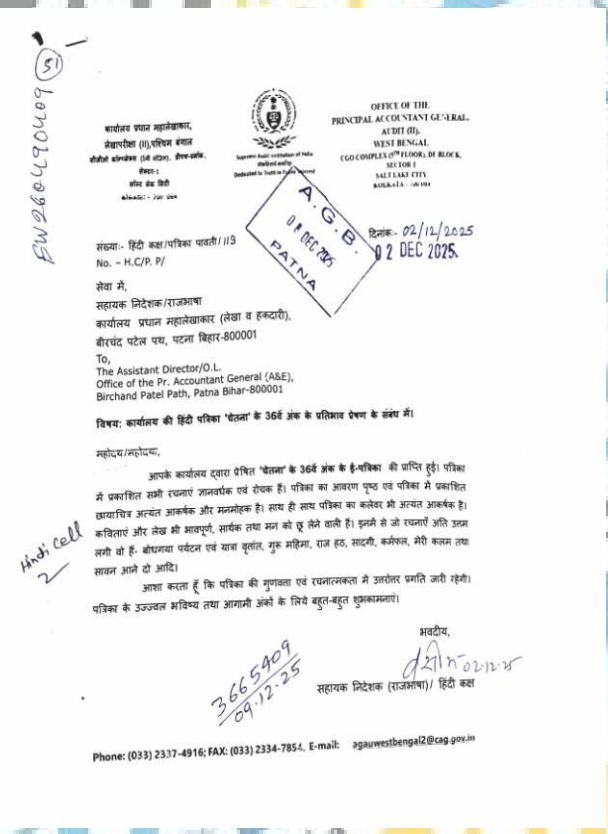

कार्यालय प्रधान महालेखाकार,
लेखापरीक्षा (II),पश्चिम बंगाल

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL,
AUDIT (II),
WEST BENGAL
CGO COMPLEX (5TH FLOOR), DF BLOCK,
SECTOR I
SALT LAKE CITY

Supreme Audit Institution of India
Dedicated to Truth in Public Interest

A.G.B.
02 DEC 2025
PATNA

संख्या:- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/ 113
No. – H.C/P. P/

दिनांक:- 02/12/2025
02 DEC 2025

सेवा में,
सहायक निदेशक/राजभाषा
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
बीरचंद पटेल पथ, पटना बिहार-800001

To,
The Assistant Director/O.L.
Office of the Pr. Accountant General (A&E),
Birchand Patel Path, Patna Bihar-800001

विषय: कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'चेतना' के 36वें अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित **'चेतना' के 36वें अंक के ई-पत्रिका** की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ ही साथ पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं और लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगी वो हैं- बोधगया पर्यटन एवं यात्रा वृतांत, गुरु महिमा, राज हठ, सादगी, कर्मफल, मेरी कलम तथा सावन आने दो आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उतरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

Hindi cell

भवदीय,

02.12.25

3665409
09.12.25

सहायक निदेशक (राजभाषा)/ हिंदी कक्ष

Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2334-7854. E-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in

---

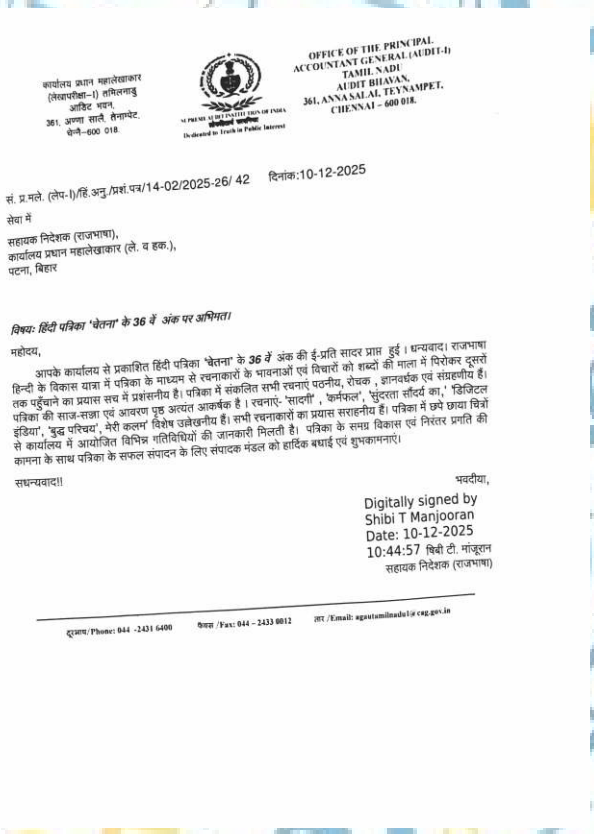

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा–I) तमिलनाडु
आडिट भवन,
361, अण्णा सालै, तैनाम्पेट,
चेन्नै–600 018.

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
Dedicated to Truth in Public Interest

OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I)
TAMIL NADU
AUDIT BHAVAN,
361, ANNA SALAI, TEYNAMPET,
CHENNAI – 600 018.

सं. प्र.मले. (लेप-I)/हिं.अनु./प्रशं.पत्र/14-02/2025-26/ 42 दिनांक:10-12-2025

सेवा में

सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.),
पटना, बिहार

विषयः हिंदी पत्रिका 'चेतना' के 36 वें अंक पर अभिमत।

महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिंदी पत्रिका **'चेतना'** के ***36 वें*** अंक की ई-प्रति सादर प्राप्त हुई । धन्यवाद। राजभाषा हिन्दी के विकास यात्रा में पत्रिका के माध्यम से रचनाकारों के भावनाओं एवं विचारों को शब्दों की माला में पिरोकर दूसरों तक पहुँचाने का प्रयास सच में प्रशंसनीय है। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं पठनीय, रोचक , ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं आवरण पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है । रचनाएं- 'सादगी' , 'कर्मफल', 'सुंदरता सौंदर्य का,' 'डिजिटल इंडिया', 'बुद्ध परिचय', मेरी कलम' विशेष उल्लेखनीय हैं। सभी रचनाकारों का प्रयास सराहनीय हैं। पत्रिका में छपे छाया चित्रों से कार्यालय में आयोजित विभिन्न गतिविधियों की जानकारी मिलती है। पत्रिका के समग्र विकास एवं निरंतर प्रगति की कामना के साथ पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

सधन्यवाद!!

भवदीया,

Digitally signed by
Shibi T Manjooran
Date: 10-12-2025
10:44:57 षिबी टी. मांजूरान
सहायक निदेशक (राजभाषा)

दूरभाष/Phone: 044 -2431 6400 फैक्स /Fax: 044 – 2433 0012 तार /Email: agautamilnadu1@cag.gov.in

आपके पत्र

महालेखाकार (ले व ह) ,केरल का कार्यालय,
तिरुवनंतपुरम -695001

OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
KERALA, THIRUVANANTHAPURAM-695001

सं. हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2025-26/ दिनांक 11-12-2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले व ह), बिहार,

पटना - 800001

महोदय/महोदया,

विषय: हिंदी पत्रिका 'चेतना' के 36वें अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

संदर्भ: आपके कार्यालय का ई-मेल दिनांक 27.11.2025

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'चेतना' के 36वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए धन्यवाद ।पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ खासकर श्रीमती प्रियंका कुमारी का लेख "जीवन में तनाव तथा उसका संपूर्णतावादी प्रबंधन", श्रीमती सुनीता कुमारी की कविताएं "नदी की उन्मुक्तता" एवं "मेरी कलम", श्रीमती प्रतिमा कुमारी का लेख "सेवानिवृति के बाद: जीवन की नई शुरुआत का नया अध्याय" और श्री अमिताभ सिंह की कविता "सावन आने दो" आदि रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं ।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका 'चेतना' की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया,

Digitally signed by
Rohini K R
Date: 11-12-2025
15:05:04
सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब,
चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB,
CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email-agaupunjab@cag.gov.in

क्रमांक-रा.अ./हिंदीपत्रिकासमीक्षा/2025-26/I/1233436/2025 दिनांक:12-12-2025

सेवा में

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) पटना,
बिहार-800001

विषय:- हिंदी पत्रिका 'चेतना' के **36वें** अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित पत्रिका "चेतना" के 36वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, पत्रिका हेतु सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। श्री नीतीश कुमार की "बोधगया पर्यटन एवं यात्रा वृत्तांत", सुश्री प्रियंका कुमारी की "जीवन में तनाव तथा उसका संपूर्णतावादी प्रबंधन", श्रीमती प्रतिमा कुमारी की "सेवानिवृति के बाद: जीवन की नई शुरुआत का नया अध्याय" एवं श्री प्रशांत प्रखर की "भोजन प्रेमी मित्र मेरा" आदि रचनाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुंदर प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रशंसनीय है। राजभाषा हिंदी की सृजनशीलता के उत्थान एवं कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं

भवदीया

EKTA
सहायक निदेशक (राजभाषा)

---

(63)

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला- 171 003

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

सं.प्र.म.ले.(ले.व ह.)/हि.प्र/हिं.क./पत्रिका समीक्षा/2025-26/207 दिनांक- 05.12.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.) का कार्यालय
बीरचंद पटेल पथ, पटना, बिहार- 800001

विषय : आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'चेतना' के 36वें अंक की ई-प्रति की पावती।

A.G.B. 17 DEC 2025 PATNA

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'चेतना' के 36वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री सन्नी कुमार की रचना "वो पल", सुश्री सुनीता कुमारी की रचना "मेरी कलम", सुश्री मेघा किरण की रचना "सुन्दरता सौन्दर्य का" एवं श्री सोनू कुमार की रचना "मायाजाल" प्रशंसनीय है।

हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका प्रयास सराहनीय है जिसके लिए आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है। आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

हिन्दी कक्ष (Hindi cell)

भवदीय,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

गार्टन कैसल बिल्डिंग, शिमला–171 003 दूरभाष: 0177–2652502 / 2651033, फैक्स: 0177–2651743
Gorton Castle Building, Shimla-171 003 Phone: 0177-2652502/2651033, Fax: 0177-2651743
E-mail:agaeHimachalpradesh@cag.gov.in

2

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी. ,
सेक्टर-17ई, चंडीगढ़ - 160017
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A & E) PUNJAB & U.T. ,
Sector-17E, CHANDIGARH – 160017
फोन (Phone): 0172 - 2702906, 2703117, 2709576,
ई-मेल (E-mail) - agaepunjab@cag.gov.in

सं.- रा.भा.अनु./पत्रिका समीक्षा/फा-10/2025-26/ दिनांक: 23/12/2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.), पटना
बिहार – 800001

विषय: कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'चेतना' के 36वें अंक की पावती प्रेषित करने के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'चेतना' के 36वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है।

पत्रिका में श्री सन्नी कुमार, कनिष्ठ अनुवादक की रचना 'वो पल', श्रीमती सोनी कुमारी, पति - श्री सन्नी कुमार, कनिष्ठ अनुवादक की रचना 'सादगी' तथा श्री सोनू कुमार, डाटा एंट्री ऑपरेटर की रचना 'मायाजाल' विशेष रूप से प्रशंसनीय है। पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

यह पत्र उपमहालेखाकार (प्रशा.) महोदया के अनुमोदन से जारी है।

भवदीय
Digitally signed by
Rakesh Ranjan Mishra
Date: 23-12-2025
10:28:07
सहायक निदेशक (राजभाषा)

1

आपके पत्र

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
ऑडिट भवन, आई.पी.एस्टेट
नई दिल्ली–110002

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
INDUSTRY AND CORPORATE AFFAIRS
AUDIT BHAWAN, I.P. ESTATE
NEW DELHI-110002

दिनांक / Date...............

सं.प्रशा/रा.भा./बाह्य पत्रि./23/2025-26/88 — दिनांक: 19.12.2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय
वीरचंद पटेल मार्ग, आर ब्लॉक,बिहार,
पटना - 800 001

विषय: कार्यालय की हिंदी पत्रिका "चेतना" के 36वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "चेतना" की ई -प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए आपका धन्यवाद। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में शामिल सभी लेख, कविताएं पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है। श्री चन्द्र किशोर तिवारी, वरिष्ठ लेखा अधिकारी की "कर्मफल" एवं श्री सन्नी कुमार, कनिष्ठ अनुवादक की "वो पल..." की रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को नव इन्द्रप्रस्थ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

Hindi Cell

भवदीय,

सहायक निदेशक (रा.भा.)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 462011

क्र.हि.क./फा-7/ जावक -87 — दिनांक 19.12.2025

प्रति,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (ले. & ह.) का कार्यालय
वीरचंद्र पटेल पथ, पटना,
बिहार-800001

विषय: कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "चेतना" के 36वें अंक की पावती बाबत।
संदर्भ: आपका पत्रांक Letter No. हिं.अ./ले.व ह./22/ प.प्र./2025-26/121 दिनांक 26.11.2025।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "चेतना" के 36वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर बोधगया पर्यटन एवं यात्रा वृत्तांत, जीवन में तनाव तथा उसका संपूर्णतावादी प्रबंधन, कर्मफल, डिजिटल इंडिया, बुद्ध परिचय, आदि रचनाएं सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

प्रफुल
सहायक निदेशक / राजभाषा

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय, झारखण्ड, राँची
Office of the Principal Accountant General (Audit), Jharkhand, Ranchi

संख्या- रा.भा.अनु./ले.प./90/पत्रिका पावती/2025-26/235 — दिनांक:08-01-2026

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (ले.व हक.) का कार्यालय, बिहार,
बीरचंद पटेल पथ,
पटना- 800001.

विषय: हिंदी पत्रिका " चेतना " के 36वें अंक की ई-प्रति की पावती का प्रेषण केसंबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका " चेतना " के 36वें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति हुई। सधन्यवाद।

पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं आंतरिक पृष्ठ बहुत ही सुंदर एवं आकर्षक है एवं मुद्रण कार्य उच्च स्तरीय है। साथ ही, पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक प्रकृति की हैं।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Digitally signed by
Shailendra Kumar
Date: 08-01-2026
13:47:40
सहायक निदेशक (राजभाषा)

दूरभाष/Telephone: 0651-2411670/2413690 फैक्स/Fax: 0651-2412517/2413701 ई-मेल/e-mail: agaujharkhand@cag.gov.in

---

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग
एम.जी.रोड, सचिवालय हिल्स, गवर्नर हाउस के सामने, पिन–793001

OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) MEGHALAYA, SHILLONG
MG Road, Secretariat Hills, Opposite to Governor House, PIN-793001

संख्या/हिंदीप्रकोष्ठ/35/पत्रिका से संबंधित सराहना/2021/624 — दिनांक: 03.02.2026

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा),
प्रधान महालेखाकार (ले व ह) का कार्यालय,
पटना, बिहार - 800 001.

विषय:- हिंदी पत्रिका - 'चेतना' के 36वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/ महोदया,

उपर्युक्त विषय पर पत्र सं. हिं.अ./ले.व.ह./22/प.प्र./2025-26/121 दिनांक 26.11.2025 द्वारा आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका - 'चेतना' के 36वें अंक की ई-प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई है, एतद् धन्यवाद। पत्रिका का सुसज्जित एवं आकर्षक बाह्य आवरण पाठकों को प्रथम दृष्टि में ही आकर्षित करता है। पत्रिका में संकलित सभी लेख एवं रचनाएँ ज्ञानवर्धक, प्रेरणास्पद तथा सराहनीय हैं। इस सफल प्रस्तुति हेतु संपादक मंडल एवं समस्त रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका - 'चेतना' के अग्रिम अंक तथा इसके निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

अनुक्रमणिका

क्र० सं०	शीर्षक	रचनाकार (सर्व श्री/सुश्री/श्रीमती)	पृष्ठ संख्या
1	बिहार की टीकुली कला : परंपरा, पहचान और सांस्कृतिक विरासत	सोनी कुमारी	1–4
2	भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के नायक सरदार भगत सिंह	नीतीश कुमार	5–9
3	भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान के महानायक – डॉ० विक्रम साराभाई	धीरज कुमार	11
4	भगवान का दोस्त	चन्द्र किशोर तिवारी	12
5	कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और हिंदी का सामंजस्य	सन्नी कुमार	13–15
6	मानव की प्रवृत्ति	प्रशांत प्रखर	17–18
7	जीवन का अर्थ	उदयभान विश्वकर्मा	19–24
8	डेंटल फ्लोस	श्रीराम पाण्डेय	26–27
9	खुश हैं लोग	आभा झा	28
10	स्मृति मंजूषा	सुनीता कुमारी	29
11	सौगन्ध	अवध बिहारी सिंह	31
12	वो तेरी आँखें (गीत)	पुर्णेन्दू कुमार झा	32
13	श्रीहरि कृपा	स्वाती कुमारी	33
14	ग़ज़ल	राम सिंगार चौहान	34
15	मेरे गाँव की कविताएँ	आफताब अंसारी	35
16	समय	रिशु सिन्हा	36

बिहार की टीकुली कला : परंपरा, पहचान और सांस्कृतिक विरासत

भारत की सांस्कृतिक विविधता उसकी लोक कलाओं में स्पष्ट रूप से झलकती है। प्रत्येक राज्य, प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्ट कला परंपरा है, जो वहाँ के इतिहास, संस्कृति, समाज और जीवनशैली को प्रतिबिंबित करती है। बिहार ऐसी ही अनेक लोक कलाओं का धनी राज्य है। मधुबनी पेंटिंग, मंजूषा कला, सिक्की घास कला के साथ–साथ टीकुली कला भी बिहार की एक प्राचीन, सुंदर और कम चर्चित कला है। यह कला न केवल सौंदर्य से वास्ता रखती है, बल्कि नारी जीवन, सामाजिक रीतियों और सांस्कृतिक मूल्यों से भी गहराई से संबंधित है।

टीकुली कला का अर्थ और उत्पत्ति

'टीकुली' शब्द का अर्थ है – महिलाओं द्वारा माथे पर लगाई जाने वाली बिंदी। बिहार में विशेष रूप से विवाह, त्योहार और मांगलिक अवसरों पर महिलाओं द्वारा टीकुली लगाने की परंपरा रही है। इसी टीकुली को सजाने, सुंदर बनाने और उसे कलात्मक रूप देने की प्रक्रिया से टीकुली कला का जन्म हुआ। इस कला के विकास में महिलाओं की मुख्य भूमिका रही है।

टीकुली कला की उत्पत्ति का संबंध मुगल काल से है। कहा जाता है कि मुगल काल में शीशे पर चित्रांकन की कला विकसित हुई और समय के साथ यह लोक कला का रूप लेती चली गई। बिहार में यह कला मुख्यतः पटना, गया, भोजपुर, नालंदा और आसपास के क्षेत्रों में प्रचलित रही। पहले यह कला शाही महिलाओं और संपन्न परिवारों तक सीमित थी, लेकिन धीरे–धीरे यह आम जनजीवन का हिस्सा बन गई।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

इतिहासकारों के अनुसार टीकुली कला का विकास लगभग 18वीं और 19वीं शताब्दी में हुआ। उस समय महिलाओं के रूप–सज्जा के लिए प्राकृतिक साधनों का प्रयोग किया जाता था। टीकुली को आकर्षक बनाने के लिए उस पर फूल–पत्तियाँ, देवी–देवताओं के प्रतीक, ज्यामितीय आकृतियाँ और शुभ चिह्न बनाए जाते थे।

ब्रिटिश काल में इस कला को एक नया रूप मिला। शीशे की उपलब्धता बढ़ी और कलाकारों ने शीशे पर रंगीन चित्र बनाकर उसे काटकर टीकुली के रूप में इस्तेमाल करना शुरू किया। धीरे–धीरे टीकुली केवल बिंदी तक सीमित न रहकर सजावटी वस्तुओं, आभूषणों और घरेलू सजावट का माध्यम बन गई।

टीकुली कला की विशेषताएँ

टीकुली कला की कुछ प्रमुख विशेषताएँ इसे अन्य लोक कलाओं से अलग बनाती हैं:

शीशे पर चित्रांकन – टीकुली कला की सबसे बड़ी पहचान शीशे के पीछे से बनाई गई चित्रकला है।

सूक्ष्म और बारीक डिजाइन – इसमें बहुत महीन रेखाओं और छोटे–छोटे डिजाइनों का प्रयोग होता है।

चमकीले रंग – लाल, हरा, नीला, पीला और सुनहरा रंग प्रमुख रूप से उपयोग किए जाते हैं।

धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीक – देवी–देवताओं, कमल, मोर, सूर्य, चंद्रमा और ज्यामितीय आकृतियों का चित्रण।

नारी केंद्रित कला : यह कला मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा महिलाओं के लिए विकसित हुई।

टीकुली कला बनाने की प्रक्रियायें निम्नलिखित हैं:–

टीकुली कला की प्रक्रिया अत्यंत धैर्य और कुशलता की माँग करती है। इसके प्रमुख चरण इस प्रकार हैं:

शीशे का चयन – सबसे पहले पतले और साफ शीशे का चयन किया जाता है।

डिजाइन बनाना – शीशे के पीछे की ओर मनचाहा डिजाइन बनाया जाता है।

रंग भरना – प्राकृतिक या सिंथेटिक रंगों से डिजाइनों को भरा जाता है।

सुखाना – रंगों को अच्छी तरह सूखने दिया जाता है।

कटिंग और फिनिशिंग – शीशे को मनचाहे आकार में काटकर किनारों को चिकना किया जाता है।

अंतिम सजावट – इसे टीकुली, पेंडेंट, फ्रेम या सजावटी वस्तु के रूप में तैयार किया जाता है।

सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व

टीकुली कला का सामाजिक महत्व अत्यंत व्यापक है। यह कला स्त्री सौंदर्य, सुहाग और शुभता का प्रतीक मानी जाती है। बिहार में विवाह के समय दुल्हन को विशेष प्रकार की टीकुली भेंट करने की परंपरा रही है। यह केवल एक सजावटी वस्तु नहीं, बल्कि सौभाग्य और समृद्धि का प्रतीक है।

इसके अलावा, टीकुली कला महिलाओं को आर्थिक आत्मनिर्भरता प्रदान करने का माध्यम भी बनी। ग्रामीण क्षेत्रों में कई महिलाएँ इस कला के माध्यम से घर बैठे रोजगार प्राप्त करती हैं।

आधुनिक समय में टीकुली कला

समय के साथ टीकुली कला में कई परिवर्तन आए हैं। आज यह कला केवल बिंदी तक

सीमित नहीं रही। आधुनिक कारीगर इसे निम्नलिखित रूपों में विकसित कर रहे हैं:

- दीवार सजावट
- फोटो फ्रेम
- पेंडेंट और झुमके
- किचन टाइल डिजाइन
- उपहार सामग्री
- इंटीरियर डेकोर आइटम

आजकल टीकुली कला को हस्तशिल्प मेलों, प्रदर्शनियों और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से देश–विदेश में पहचान मिल रही है।

टीकुली कला और सरकारी प्रयास

भारत सरकार और बिहार सरकार द्वारा टीकुली कला को संरक्षित और प्रोत्साहित करने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं। हस्तशिल्प प्रशिक्षण केंद्रों, स्वयं सहायता समूहों और महिला सशक्तिकरण योजनाओं के माध्यम से इस कला को नया जीवन मिला है।

कुछ संस्थानों द्वारा टीकुली कला का डिजाइन स्कूलों और कला पाठ्यक्रमों में भी शामिल किया गया है, जिससे युवा पीढ़ी इस परंपरा से जुड़ सके।

चुनौतियाँ और संरक्षण की आवश्यकता

हालाँकि टीकुली कला का महत्त्व बहुत अधिक है, फिर भी यह कई चुनौतियों से जूझ रही है जो निम्नलिखित हैं:–

- मशीन से बनी सस्ती सजावटी वस्तुओं की प्रतिस्पर्धा
- युवा पीढ़ी की रुचि में कमी
- कारीगरों को उचित मूल्य न मिलना
- कच्चे माल की बढ़ती कीमत

इन चुनौतियों के बावजूद, यदि उचित संरक्षण, विपणन और प्रशिक्षण दिया जाए तो टीकुली कला फिर से अपनी पुरानी गरिमा प्राप्त

कर सकती है।

निष्कर्ष

टीकुली कला बिहार की सांस्कृतिक आत्मा की एक अनमोल धरोहर है। यह कला केवल सौंदर्य का माध्यम नहीं, बल्कि इतिहास, परंपरा, नारी शक्ति और सामाजिक मूल्यों का जीवंत प्रतीक है। आज आवश्यकता है कि हम इस कला को केवल संग्रहालयों तक सीमित न रखें, बल्कि इसे अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाएँ।

टीकुली कला का संरक्षण हमारी जिम्मेदारी है, क्योंकि इसके संरक्षण के साथ ही हम अपनी सांस्कृतिक पहचान और विरासत को भी सुरक्षित रखते हैं। यदि आने वाली पीढ़ियाँ इस कला को अपनाएँ और आगे बढ़ाएँ, तो निश्चित रूप से टीकुली कला न केवल बिहार, बल्कि पूरे भारत की पहचान बनेगी।

सोनी कुमारी,
पति- श्री सन्नी कुमार,
कनिष्ठ अनुवादक

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के नायक सरदार भगत सिंह

देश की आजादी की लड़ाई में अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन के सबसे प्रभावशाली नायक, एक महान स्वतंत्रता सेनानी, अमर शहीद, वीर सपूत भगत सिंह का जन्म 28 सितंबर, 1907 को एक देशभक्त सिख परिवार में हुआ था। इनकी जन्म भूमि बंगा गाँव, पश्चिमी पंजाब के लायलपुर जिला मे हुआ था जो वर्तमान में पाकिस्तान में स्थित है।

भगत सिंह का परिवार

उनका परिवार स्वतंत्रता संग्राम से गहरा जुड़ा था। उनके पिता का नाम सरदार किशन सिंह और माता का नाम विद्यावती कौर था। वे एक किसान परिवार से थे। उनके परिवार पर आर्य समाज व दयानन्द सरस्वती की विचारधारा का गहरा प्रभाव था। भगत सिंह के जन्म के समय उनके पिता एवं उनके दोनों चाचा अजित सिंह तथा स्वर्ण सिंह जेल में थे। उन्हें वर्ष 1906 में लागू औपनिवेशीकरण विधेयक के खिलाफ प्रदर्शन करने के जुल्म में जेल में डाल दिया गया था। जिस दिन भगत सिंह का जन्म हुआ, उसी दिन उनके पिता एवं चाचा को जेल से रिहा किया गया था इस कारण उनकी दादी ने उनका नाम भागो वाला मतलब "अच्छे भाग्य वाला" रखा था। बाद में उन्हें भगत सिंह कहा जाने लगा। उनके दादा और पिता भी स्वतंत्रता सेनानी थे, इसलिए बचपन से ही भगत सिंह के मन में देशभक्ति के बीज अंकुरित हो गए थे।

भगत सिंह का शिक्षा जीवन

भगत सिंह ने अपनी प्रारंभिक पढ़ाई पाँचवी कक्षा तक गाँव के स्थानीय स्कूल में पूरी की और उसके बाद उन्हें एंग्लो वैदिक स्कूल, लाहौर में दाखिला करवाया गया । बचपन से ही वे पढ़ाई में होशियार और जिज्ञासु थे। उनकी बुद्धिमत्ता और साहस का परिचय बचपन से ही मिलता था। बाद में उन्होंने लाहौर के नेशनल कॉलेज में दाखिला लिया, जहाँ उनकी राजनीतिक समझ और देशभक्ति की भावना और गहरी हुई। नेशनल कॉलेज में ही वे सक्रिय छात्र नेता बने और यहाँ वे सामाजिक व राजनीतिक विषयों पर चर्चा करते थे। यहाँ उन्हें कार्ल मार्क्स, माक्सिम, गोरकी, और अन्य क्रांतिकारी लेखकों के विचारों से परिचय मिला, जिसने उनके विचारों को और मजबूती दी।

जलियाँवाला कांड का प्रभाव

अमृतसर में 13 अप्रैल 1919 ई में जलियाँवाला बाग हत्याकांड की खबर सुनकर उनकी आँखों में देश के प्रति प्रेम और क्रांति की लपट जल उठी। इस हत्याकांड ने भगत सिंह के बालमन पर गहरा प्रभाव डाला था। उनका मन इस अमानवीय कृत्य को देख देश को आजादी दिलाने की सोचने लगा। वे युवा उम्र में ही चंद्रशेखर आजाद, महात्मा गांधी और लाला लाजपत राय

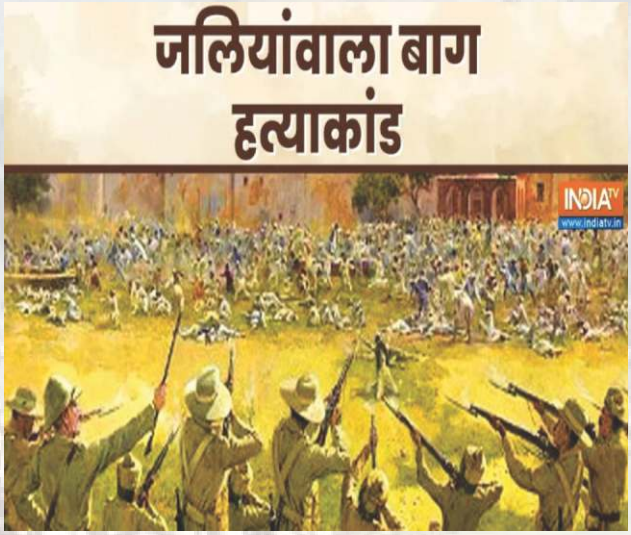

जैसे नेताओं से प्रेरित हुए और लाहौर के नेशनल कॉलेज की पढ़ाई छोड़ भारत की आजादी के लिए नौजवान भारत सभा की स्थापना की थी।

सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता

भगत सिंह बचपन में ही सामाजिक अन्याय और अंग्रेजों की नीतियों के खिलाफ जागरूक हो गए थे। वे स्कूल के छात्र सभा में भी सक्रिय रहते थे और सामाजिक मुद्दों पर चर्चा करते थे। उनके दोस्तों और परिवार के लोग उन्हें 'बहादुर' और 'निडर' कहते थे। जिस समय जलियाँवाला बाग हत्याकांड हुआ था, उस वक्त भगत सिंह केवल 12 वर्ष के थे। इस घटना की सूचना मिलते ही भगत सिंह अपने स्कूल से 12 मील पैदल चलकर जलियाँवाला बाग पहुँच गए। गांधी जी का असहयोग आंदोलन के समय वे गांधीजी के अहिंसात्मक और क्रांतिकारियों के हिंसक आंदोलन में से अपने लिए रास्ता चुनने की कोशिश करने लगे, परंतु जब गांधी जी ने असहयोग आंदोलन वापस ले लिया तो वे अत्यंत निराश हुए और देश की स्वतंत्रता के लिए हिंसात्मक क्रांति का मार्ग अपनाया।

स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका

भगत सिंह 14 वर्ष की आयु से ही कई क्रांतिकारी संस्थाओं में कार्य करने लगे थे। वर्ष 1923 में इंटर की परीक्षा पास करने के बाद उन्हें विवाह बंधन में बांधने की तैयारी होने लगी तो वे लाहौर से भागकर कानपुर आ गए और देश की आजादी के संघर्ष में ऐसे रमें की पूरा जीवन ही देश को समर्पित कर दिया। काकोरी कांड में रामप्रसाद "विस्मिल" सहित कुल चार क्रांतिकारियों को फांसी एवं सोलह अन्य को कारावास की सजा ने उन्हें अत्यंत बेचैन कर दिया और उन्होंने अपनी पार्टी नौजवान भारत सभा का

हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोशिएशन में विलय कर दिया और चन्द्रशेखर आजाद, सुखदेव, राजगुरु इत्यादि से मिलकर इसे हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोशिएशन नाम दिया। वर्ष 1928 ई० में अँग्रेजी शासन के साइमन कमीशन के विरोध में सरकार द्वारा लाठी चार्ज किया गया और इसी लाठी चार्ज में घायल होकर लाला लाजपत राय की मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु ने भगत सिंह को झकझोर दिया और उन्होंने उस वक्त के पुलिस सुप्रीटेंडेंट स्काट के हत्या की योजना बनाई, परंतु पहचान के अभाव मे भगत सिंह और राजगुरु द्वारा सहायक पुलिस अधीक्षक जॉन सॉन्डर्स की गोली मारकर हत्या कर दी गई। इसी मुकदमा को लाहौर षड्यंत्र केस कहा गया। यद्यपि भगत सिंह बामपंथी विचारधारा के समर्थक थे, तथापि वे समाजवाद के पोशाक भी थे। वे अंग्रेजी सरकार की पूँजीपतियों द्वारा मजदूरों के शोषण की नीति के कट्टर विरोधी थे। इसी मजदूर विरोधी नीतियों को ब्रिटिश संसद में पारित न होने देना उनके दल का निर्णय था। भगत सिंह चाहते थे कि अंग्रेजों को पता चलना चाहिए कि हिंदुस्तानी जाग चुके हैं इसलिए उन्होंने दिल्ली के केंद्रीय एसेम्बली में बम फेंकने की योजना बनाई थी। योजना के अनुरूप उन्होंने 08 अप्रैल 1929 ई० को बटुकेश्वर दत्त के साथ बम फेका। यद्यपि वे वहाँ से बचकर भाग सकते थे, परंतु उन्होंने अंग्रेजों को अपनी आवाज की धमक सुनाने के लिए वहीं पर निडर खड़े रहे और **"इंकलाब–जिंदाबाद" और "साम्राज्यवाद मुर्दाबाद"** का उद्घोष करते रहे। वहीं कुछ देर बाद पुलिस ने दोनों को गिरफ्तार कर लिया ।

जेल मे रहकर भी क्रांति का दीप जलाते रहना

देश के सच्चे सपूत जेल में रहने के वावजूद भी अपने देश के युवाओं में क्रांति के दीपक को जीवित रखने के लिए लेख और पत्र लिखते रहते थे। लेख में उन्होंने पूँजीपतियों को देश का शत्रु बताया। भगत सिंह हिंदी, उर्दू, पंजाबी, अँग्रेजी एवं संस्कृत भाषा में भी निपुण थे। जेल में रहने के दौरान उन्होंने अँग्रेजी भाषा में भी एक लेख लिखा जिसका शीर्षक था "मैं नास्तिक क्यूँ हूँ" जेल में उनके साथ रहे यतीन्द्रनाथ दास की 64 दिनों के भूख हड़ताल के बाद मृत्यु हो गई, जिससे भगत सिंह अत्यंत व्यथित हुए। भगत सिंह की बहादुरी, बलिदान उनके लिए प्रेरणा का स्त्रोत है, जो न्याय, समानता और स्वतंत्रता के लिए लड़ना चाहते हैं।

सर्वस्व बलिदान

अदालत द्वारा सहायक पुलिस अधीक्षक जॉन साँन्डर्स की हत्या एवं केंद्रीय एसेम्बली में बम फेंकने के दोष में दिनांक 07 अक्तूबर 1930 ई० को उन्हें फांसी की सजा सुनाई गई और उनके दो अन्य साथी राजगुरु, सुखदेव के साथ निर्धारित तिथि से एक दिन पहले 23 मार्च 1931 को एक साथ फांसी के फंदे पर लटका दिया गया। फांसी पर जाते वक्त देश के वीर सपूत **"मेरा रंग दे बसंती चोला, रंग दे–रंग दे। मेरा रंग दे बसंती चोला, माय रंग दे।।"** गुन–गुना रहे थे। यह एक संयोग था की जिस दिन उन्होंने संसार से विदा ली, उस वक्त उनकी उम्र 23 वर्ष 05 माह और 23 दिन थी और वो तारीख भी 23 मार्च ही थी ।

देश के सच्चे सिपाही के कुछ प्रसिद्ध कथन

- क्रांति बम और पिस्तौल से शुरू नहीं होती। क्रांति की तलवार विचारों की शान पर तेज होती है।
- वे मुझे मार सकते हैं, लेकिन मेरे विचारों को नहीं मार सकते। वे मेरे शरीर को कुचल सकते हैं, लेकिन मेरी आत्मा को नहीं।
- "अगर बहरे को सुनाना है तो आवाज बहुत तेज होनी चाहिए।"

- मैं जीवन में महत्वाकांक्षा, आशा और आकर्षण से भरपूर हूँ। लेकिन जरूरत पड़ने पर मैं सब कुछ त्याग सकता हूँ।
- क्रांति मानव जाति का एक अविभाज्य अधिकार है। स्वतंत्रता सभी का अविनाशी जन्मसिद्ध अधिकार है। श्रम ही समाज का वास्तविक पालनहार है।
- किसी ने सच ही कहा है, सुधार बूढ़े आदमी नहीं कर सकते । वे तो बहुत ही बुद्धिमान और समझदार होते हैं। सुधार तो होते हैं युवकों के परिश्रम, साहस, बलिदान और निष्ठा से, जिनको भयभीत होना आता ही नहीं और जो विचार कम और अनुभव अधिक करते हैं ।
- उन्हें यह फिक्र है हरदम, नयी तर्ज–ए–जफा क्या है ?

हमें यह शौक है देखें, सितम की इंतहा क्या है?
दहर से क्यूँ खफा रहें, चरख का क्या गिला करें, सारा जहां आडू सही, आओ! मुकाबला करें ।।

उपसंहार

भगत सिंह के बलिदान से देश के स्वतंत्रता संग्राम को गति मिली उनकी शहादत के बाद देश के नवयुवकों ने स्वतंत्रता की लौ को प्रकाशमान कर दिया। उन्हें देश के समस्त शहीदों के सिरमौर के रूप मे जाना जाता है आज भी भारत और पाकिस्तान की जनता भगत सिंह को आजादी के दीवाने के रूप मे देखती है । उनके जीवन पर कई सारी फिल्में जिनमें– द लीजेंड ऑफ भगत सिंह, शहीद, शहीद भगत सिंह आदि हैं। संपूर्ण भारत अमर शहीद के त्याग और अंततः उनके बलिदान के लिए ऋणी रहेगा।

शहीद भगत सिंह अमर रहें।

नीतीश कुमार,
लेखाकार

हिंदी पखवाड़ा– 2025 की झलकियाँ

भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान के महानायक – डॉ0 विक्रम साराभाई

आज यदि अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में भारत की गणना विश्व के अग्रणी देशों में की जाती है, तो इसका श्रेय डॉ. विक्रम साराभाई को जाता है। स्वतंत्रता के बाद कोई भी यह कल्पना नहीं कर सकता था कि एक नवस्वतंत्र राष्ट्र इतनी शीघ्र अंतरिक्ष के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त कर लेगा। किंतु डॉ. विक्रम साराभाई उन चुनिंदा दूरदर्शी व्यक्तियों में से थे, जिन्होंने भारत को एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभरते हुए देखने का स्वप्न देखा। वे चाहते थे कि भारत भी पश्चिमी देशों की भाँति अंतरिक्ष अनुसंधान में अग्रणी भूमिका निभाए। प्रारंभ में सरकार को इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए मनाना उनके लिए चुनौतीपूर्ण था, किंतु वर्ष 1957 में तत्कालीन सोवियत संघ द्वारा उपग्रह के सफल प्रक्षेपण के बाद भारत सरकार का दृष्टिकोण बदला। इससे डॉ. साराभाई के प्रयासों को बल मिला। परिणामस्वरूप, उन्होंने वर्ष 1962 में इंडियन नेशनल कमेटी फॉर स्पेस रिसर्च (INCOSPAR) की स्थापना की, जो आगे चलकर भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के रूप में विकसित हुई। इसी कारण उन्हें भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का जनक कहा जाता है। उनकी अंतरराष्ट्रीय ख्याति का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि वर्ष 1974 में सिडनी स्थित अंतरराष्ट्रीय खगोल विज्ञान संघ ने चंद्रमा के एक क्रेटर का नाम 'साराभाई क्रेटर' रखा। इतना ही नहीं, चंद्रयान–2 मिशन के लैंडर का नाम भी उनके सम्मान में 'विक्रम लैंडर' रखा गया।

डॉ. विक्रम साराभाई का जन्म 12 अगस्त 1919 को अहमदाबाद में प्रसिद्ध उद्योगपति श्री अंबालाल साराभाई के परिवार में हुआ। उन्होंने गुजरात कॉलेज से इंटरमीडिएट तक विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की और वर्ष 1937 में उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड चले गए। वहाँ उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में अध्ययन किया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान वे भारत लौट आए। मात्र 28 वर्ष की आयु में, 11 नवंबर 1947 को उन्होंने अहमदाबाद में

भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (PRL) की स्थापना की। महान वैज्ञानिक सर सी. वी. रमन के मार्गदर्शन में उन्होंने कॉस्मिक किरणों पर शोध किया। युद्ध समाप्त होने के बाद वे पुनः कैम्ब्रिज गए और वर्ष 1947 में कॉस्मिक किरणों पर किए गए शोध के लिए उन्हें डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई। भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के अंतर्गत, डॉ. होमी जहाँगीर भाभा के सहयोग से उन्होंने तिरुवनंतपुरम के निकट थुंबा में देश के पहले रॉकेट प्रक्षेपण केंद्र की स्थापना की। यह केंद्र एक वर्ष के भीतर तैयार हो गया और 21 नवंबर 1963 को यहीं से पहला रॉकेट प्रक्षेपण किया गया। वर्ष 1966 में डॉ. भाभा के निधन के पश्चात डॉ. विक्रम साराभाई को भारतीय परमाणु ऊर्जा आयोग का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। इस पद पर रहते हुए उन्होंने भारत में परमाणु संयंत्रों के निर्माण की दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किए। वर्ष 1966 में डॉ. साराभाई और नासा के बीच एक समझौता हुआ, जिसके अंतर्गत जुलाई 1975 में 'साइट (SITE) कार्यक्रम' के लिए उपग्रह का प्रक्षेपण किया गया। 30 दिसंबर 1971 को भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान का यह महानायक इस संसार से विदा हो गया। उनके अतुलनीय योगदान के लिए उन्हें वर्ष 1966 में 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया गया। डॉ. विक्रम साराभाई का जीवन हमें दूरदृष्टि, वैज्ञानिक सोच और राष्ट्रसेवा की प्रेरणा देता है।

धीरज कुमार,
वरिष्ठ लेखाकार

भगवान का दोस्त

एक बार एक संत के मुख से एक कथा सुनी थी, जिसमें उन्होंने बताया कि उनका एक शिष्य 'राघव' एक बार श्रीकृष्ण जी के मंदिर में पूजा करने गया। वहाँ उसने प्रसाद की दुकान से प्रसाद एवं फूलमाला ली तथा मंदिर की ओर जाने लगा। रास्ते में उसने देखा कि एक 10 – 11 साल का बच्चा हाथ में फूल की माला लिए उस तपती धूप में नंगे पैर माला बेच रहा था तथा गर्मी से जब उसका पैर जलने लगता तो गर्मी की जलन से बचने के लिए वह एक पैर को दूसरे पैर पर बारी–बारी से चढ़ाता रहता था। यह देखकर राघव से नहीं रहा गया, वह प्रसाद की दुकान में वापस आया और दुकानवाले से कहा कि भैया आप थोड़ी देर के लिए इस प्रसाद को रखें, मैं कुछ देर में आकर इसे पुनः ले जाऊँगा और भगवान को भोग लगाऊँगा। यह कहकर राघव पास की एक चप्पल की दुकान में गया और उस फूलवाले बच्चे के लिए एक चप्पल खरीदी, फिर उस बच्चे के पास जाकर उसे चप्पल पहना दी। चप्पल पाकर बच्चा बहुत प्रसन्न हुआ और राघव को कृतज्ञता भरी नजरों से देखता हुआ उसकी उँगली पकड़ ली और कहा कि तुम कृष्ण हो ना ? राघव ने कहा, नहीं, मैं कृष्ण नहीं हूँ, लेकिन बच्चा मानने को तैयार नहीं था। बार – बार वह कह रहा रहा था कि तुम कृष्ण हो, मुझे सच–सच बतलाओ मैं किसी से नहीं कहूँगा। राघव ने कहा कि तुम्हें ऐसा क्यों लग रहा है कि मैं कृष्ण हूँ, तब बच्चे ने कहा कि मैंने कल ही कृष्णजी से कहा था कि गर्मी से पैर बहुत जलता है। मुझे एक चप्पल दो और मुझे आज चप्पल मिल गई, इसलिए मैं तुम्हें कृष्ण मानता हूँ। अगर तुम कृष्ण नहीं हो तो जरूर उसके दोस्त होगे क्योंकि मुझे पूरा विश्वास है कि उसी ने तुम्हें मेरे पास चप्पल लेकर भेजा होगा।

उक्त कथा हमें प्रेरित करती है कि हम सभी भगवान के दोस्त बनें तथा यथासंभव परोपकार करें।

'परहित सरिस धरम नहीं भाई
परपीड़ा सम नहीं अधमाई।

आज हमलोग दुखी इसलिए हैं, क्योंकि हमें सिर्फ अपने सुख की चिंता है। वस्तुतः जो दूसरों के सुख के लिए चिंतित है, वही दान करता है, वृक्ष लगाता है, धर्मशाला बनवाता है, प्याऊ लगाता है। यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा था कि 'धर्म क्या है'? युधिष्ठिर ने कहा – "दया"। जो दूसरों का दुख देखकर उसे सुखी करने के लिए तड़प उठे, उसी को दया कहते हैं।

सबके भीतर नारायण हैं, अतः सब अपने हैं, इस भाव से सबकी सेवा करें। एक व्यक्ति को भी अगर हम खुश कर दिये तो जगदीश प्रसन्न हो जाते हैं। ईश्वर से प्रार्थना करते रहना चाहिए कि किसी परोपकार के काम में हमें भी माध्यम (निमित्त) बनाये तथा अपने दोस्त की पदवी का सौभाग्य प्रदान करें।

वैष्णव जन तो तेने कहिए,
जे पीड़ पराई जाणे रे ।

===== इति श्री =======

चन्द्र किशोर तिवारी,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और हिंदी का सामंजस्य

वर्तमान युग को यदि "प्रौद्योगिकी का युग" कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। इंटरनेट, मोबाइल, क्लाउड कंप्यूटिंग और अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence – AI) ने मानव जीवन की दिशा और दशा दोनों बदल दी हैं। आज मशीनें केवल गणना नहीं करतीं, बल्कि सीखती हैं, निर्णय लेती हैं और मनुष्य की तरह संवाद भी करती हैं। ऐसे समय में यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि इस तीव्र गति से विकसित हो रही तकनीक में हिंदी भाषा का स्थान क्या है?

भारत विश्व की सबसे बड़ी जनसंख्या वाले देशों में से एक है और यहाँ करोड़ों लोग हिंदी बोलते और समझते हैं। यदि AI का विकास केवल अंग्रेजी तक सीमित रहेगा तो यह भारत की विशाल आबादी को तकनीकी प्रगति से वंचित कर देगा। अतः "कृत्रिम बुद्धिमत्ता में हिंदी का स्थान" केवल भाषाई प्रश्न नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक समावेशन का प्रश्न भी है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता वह तकनीक है जिसके माध्यम से मशीनों को मानव जैसी बुद्धि प्रदान की जाती है। AI आधारित प्रणालियाँ डेटा का विश्लेषण करती हैं, पैटर्न पहचानती हैं और अनुभव से सीखती हैं। उदाहरण के लिए : वॉयस असिस्टेंट (जैसे मोबाइल में बोलकर खोज करना), चैटबॉट, स्वचालित अनुवाद, चेहरे की पहचान।

विश्व स्तर पर AI के विकास में कई बड़ी कंपनियों और संस्थानों ने योगदान दिया है, जैसे Google, Microsoft, OpenAI तथा IBMA। इन संस्थाओं ने प्राकृतिक भाषा संसाधन (Natural Language Processing – NLP) के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है।

भारत में हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान का आधार है। हिंदी देश के अनेक राज्यों में बोली और समझी जाती है। समाचार, शिक्षा, सिनेमा, सोशल मीडिया और प्रशासन में हिंदी का व्यापक उपयोग होता है।

डिजिटल क्रांति के बाद ग्रामीण और अर्धशहरी क्षेत्रों में भी इंटरनेट का प्रसार हुआ है। परंतु इन क्षेत्रों में अंग्रेजी का ज्ञान सीमित है। ऐसे में यदि AI आधारित सेवाएँ हिंदी में उपलब्ध हों तो यह डिजिटल समावेशन (Digital Inclusion)

को बढ़ावा दे सकता है।

AI के अंतर्गत प्राकृतिक भाषा संसाधन (NLP) वह क्षेत्र है जो मानव भाषा को समझने और उत्पन्न करने की क्षमता देता है। हिंदी जैसी भाषाओं के लिए AI में निम्नलिखित कार्य किए जा रहे हैं:

- मशीन अनुवाद – अंग्रेजी से हिंदी और हिंदी से अन्य भाषाओं में अनुवाद।
- वॉयस रिकग्निशन – हिंदी बोलने पर मशीन का समझना।
- टेक्स्ट–टू–स्पीच – लिखे हुए हिंदी पाठ को आवाज में बदलना।
- स्पीच–टू–टेक्स्ट – बोली गई हिंदी को लिखित रूप में परिवर्तित करना।
- चैटबॉट – हिंदी में प्रश्नोत्तर प्रणाली।

आज कई प्लेटफॉर्म हिंदी में सेवाएँ दे रहे हैं। उदाहरण के लिए, Google ने हिंदी वॉयस सर्च को बढ़ावा दिया है और Microsoft ने हिंदी भाषायी मॉडल विकसित किए हैं।

AI आधारित शिक्षण प्लेटफॉर्म छात्रों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा देने में सहायक हो सकते हैं। यदि कोई छात्र ग्रामीण क्षेत्र से है और अंग्रेजी में सहज नहीं है, तो हिंदी आधारित AI ट्यूटर उसके लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। जैसे– हिंदी में ई–लर्निंग सामग्री, AI आधारित परीक्षा मूल्यांकन तथा व्यक्तिगत सीखने की योजना (Personalized Learning), इससे शिक्षा की गुणवत्ता और पहुँच दोनों में सुधार संभव है।

भारत में अनेक सरकारी योजनाएँ डिजिटल माध्यम से संचालित हो रही हैं। यदि इन सेवाओं में हिंदी AI चैटबॉट उपलब्ध हों, तो आम

नागरिक आसानी से जानकारी प्राप्त कर सकता है।

ई–कॉमर्स और डिजिटल मार्केटिंग के क्षेत्र में हिंदी का महत्व तेजी से बढ़ रहा है। ग्रामीण और छोटे शहरों के उपभोक्ताओं तक पहुँचने के लिए कंपनियाँ हिंदी सामग्री का उपयोग कर रही हैं, जैसे– हिंदी में ग्राहक सेवा चैटबॉट एवं वॉयस आधारित ऑर्डर सिस्टम। इससे बाजार का विस्तार होता है और नए रोजगार अवसर उत्पन्न होते हैं।

यद्यपि हिंदी में AI का विकास हो रहा है, फिर भी अनेक चुनौतियाँ सामने हैं:

- डेटा की कमी – हिंदी में गुणवत्तापूर्ण डिजिटल डेटा सीमित है।
- भाषाई विविधता – हिंदी की अनेक बोलियाँ हैं, जैसे अवधी, ब्रज, भोजपुरी आदि।
- तकनीकी शब्दावली – आधुनिक विज्ञान और तकनीक के लिए उपयुक्त हिंदी शब्दों का अभाव।
- लिपि संबंधी समस्याएँ – देवनागरी लिपि के जटिल स्वरूप के कारण तकनीकी कठिनाइयाँ।

इन समस्याओं के समाधान के लिए सरकारी और निजी संस्थाओं को मिलकर प्रयास करना होगा। AI के माध्यम से हिंदी साहित्य, लोककथाएँ और ऐतिहासिक दस्तावेज डिजिटल

रूप में सुरक्षित किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए : प्राचीन ग्रंथों का डिजिटलीकरण, सारांश निर्माण, हिंदी कविता और कहानियों का वाचन आदि। इससे आने वाली पीढ़ियों के लिए सांस्कृतिक धरोहर सुरक्षित रहेगी।

भविष्य में AI और हिंदी का संबंध और अधिक सुदृढ़ होगा। बड़े भाषा मॉडल (Large Language Models) हिंदी में लेखन, अनुवाद और शोध कार्य को सरल बना रहे हैं। भारत सरकार की "डिजिटल इंडिया" पहल भी भारतीय भाषाओं में तकनीकी विकास को प्रोत्साहित कर रही है। यदि हिंदी में AI का सशक्त विकास होता है, तो यह भारत को तकनीकी दृष्टि से आत्मनिर्भर बना सकता है। AI में हिंदी की उपस्थिति समाज के उस वर्ग को भी डिजिटल दुनिया से जोड़ सकती है, जो अब तक भाषा के कारण पीछे था।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधुनिक युग की क्रांतिकारी तकनीक है, और हिंदी भारत की आत्मा। यदि AI का विकास केवल अंग्रेजी में सीमित रहता है, तो यह भारत की विशाल जनसंख्या के साथ अन्याय होगा।

हिंदी में AI का विकास न केवल तकनीकी आवश्यकता है, बल्कि सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक संरक्षण का माध्यम भी है। आवश्यक है कि सरकार, शैक्षणिक संस्थान और तकनीकी कंपनियाँ मिलकर हिंदी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता को बढ़ावा दें। इससे भारत डिजिटल युग में अग्रणी बन सकेगा और "वसुधैव कुटुंबकम्" की भावना को तकनीकी माध्यम से साकार कर सकेगा।

सन्नी कुमार,
कनिष्ठ अनुवादक

वर्ष 2025-26 की प्रथम छःमाही के दौरान उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु नराकास (कें. का.), पटना द्वारा प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए

भभुआ (कैमूर) में लेखांकन एवं पेंशन पर आयोजित कार्यशाला की झलक

मानव की प्रवृत्ति

हीरामन मेरा दोस्त था, उम्र में मुझसे कुछ साल छोटा। वह हंसमुख, मिलनसार, विनोदी और जिज्ञासु प्रवृत्ति का था। कुल मिलाकर उसमें वे सब गुण थे जो एक दोस्त में आजकल अपेक्षित होते हैं। स्वाभाविक रूप से उसके अनेक दोस्त थे, जिसमें मैं भी एक था। वैसे तो मैं अंतर्मुखी प्रकृति का हूँ, पर मुझे जानने वाले मुझे बुद्धिजीवी भी मानते हैं, सो यदा कदा मुझसे सलाह मांगने भी कुछ लोग आते हैं। यहाँ मैं ये बता दूं कि मेरी सलाह भले ही मुझे खरा सोना प्रतीत हो, पर अधिकतर लोग करते वही हैं जो उनकी सुविधा के अनुसार सही हो। खैर मेरी रामकहानी तो लम्बी है और शायद मुझ जैसी नीरस भी तो आते हैं मेरे दोस्त हीरामन पर।

लगभग छः महीने पहले वह मिला था। उसके चेहरे पर उत्साह और उलझन का मिश्रित भाव जैसे नृत्य कर रहा था। और कोई होता तो शायद उस नृत्य का आनंद उठाता पर दोस्त होने के नाते उस नृत्य को रोकना मेरा कर्तव्य था। पूछने पर उसने बताया कि वह जीवन में कुछ बहुत बड़ा बनना चाहता था। उसे कीड़े–मकोड़ों का जीवन जीने से श्रेयस्कर भेड़चाल से हटकर कुछ करना था। पर उसने अभी तक लक्ष्य बनाया ही नहीं था। इसीलिए मेरे पास आया था। मैंने उसे कई विकल्प बताए, जैसे कमीशन की तैयारी, वकालत, व्यापार, नेतागिरी आदि से सम्बंधित सामग्री, पर उसके चेहरे पर थोड़ी सी प्रसन्नता भी न दिखी। अंत में मैंने उसे पी.एच.डी. कर के प्रोफेसर बनने की सलाह दी, ताकि वो आगे चलकर बिना त्यागपत्र दिए हुए सांसद या विधायक बनने के लिए चुनाव लड़ सकता है, फिर उसके बाद मुख्यमंत्री/प्रधानमंत्री नहीं तो कम से कम राज्य मंत्री तो बन ही सकता है। मुझे लगा मेरा ये आईडिया भी फ्लॉप न साबित हो, क्योंकि यह मार्ग थोडा कठिन और अति महत्वाकांक्षापूर्ण था। पर आशा के विपरीत उसका चेहरा खिल उठा। उसने मुझे गले से लगा लिया और कहा 'मान गए गुरु! तुम वाकई जादूगर हो। लगे हाथ ये भी बता दो कि मैं कौन सा विषय लेकर शोध करूँ।' मैंने कहा 'यार इस नौकरी में आने से पहले मैंने भी पी.एच.डी. में दाखिला लिया था। मेरा सोचा हुआ शोध ही पूरा कर के देख।' उसके सवालिया नजरों से देखने पर मैंने आगे कहा 'मेरा टॉपिक था "मानव की प्रवृत्ति"। तुम चाहो तो इस शीर्षक पर अपना शोध कर सकते हो। मैं भी यथासंभव मदद कर दूंगा।' हीरामन खुश होकर चला गया। बिना मेहनत के कुछ भी मिल जाए तो इंसान प्रसन्न हो जाता है, जनता के इसी नब्ज को पकड़कर राजनीतिक दल और नेतागण जनता को उसी के टैक्स के पैसे से कुछ मुफ्त देकर मुफ्त का वोट पा जाते हैं और अपना उल्लू सीधा कर लेते हैं।

अब वो जब भी आता 'मानव की प्रवृत्ति' पर चर्चा करता और शोध के लिए टिप्स लेता, मुझे भी इस परोपकार के काम में मजा आ रहा था। उसने मुझसे वादा किया था कि जब उसे डिग्री मिलेगी तो मुझे कुछ आर्थिक सहायता देगा। इसीलिए मैं भी दुगने उत्साह से इस कार्य में लग गया था। मेरे अन्दर का साहित्यकार और शिक्षक एकाएक जैसे जागृत हो गया था और उसे अब सुषुप्ता अवस्था में जाने देने का मेरा कोई इरादा नहीं था। अब उससे ज्यादा मैं ही मेहनत करने लगा था। आखिर ऑफिस के उबाऊ और नीरस काम करते करते कब मेरी प्रतिभा को लकवा मार गया था, ये मुझे पता ही नहीं चला। अब यही एक साधन था, जिससे मैं अपने अन्दर के रचनाकार को पुनर्जीवित कर सकता था और उसमें मुझे रस भी आ रहा था।

कुछ दिन ऐसे ही बीत गए। वो आता, 'मैटर' लिखता और चला जाता। पहले तो जोशोखरोश से वह मेरे द्वारा लिखाए गए बातों को लिखता था, पर बाद में ऐसा न हो रहा था, एक चीज ऐसी थी जिसे मैंने अपने जूनून में पहले गौर नहीं किया था। अब वह खुद से मेहनत नहीं कर रहा था, बल्कि जो कुछ मैं लिखा देता वही लिख लेता था और चला जाता था। कभी कभी तो हाथ दर्द का बहाना कर देता और उसकी जगह मुझे ही लिखना पड़ता था, लेकिन मुझे तो इस काम में मजा आ रहा था सो

मैंने ध्यान नहीं दिया।

पहले वो जब भी आता, बच्चों के लिए चोकलेट, बिस्कुट या कभी कभी श्रीमती जी के लिए तोहफे भी लाता। लेकिन अब खाली हाथ आने लगा था। उसका यूँ खाली हाथ आना श्रीमती जी को खल रहा था, क्योंकि वो जब भी आता मेरी फरमाइश पर या औपचारिकतावश उसे चाय, कॉफी, नाश्ता बनाकर देना पड़ता था। ये दुनिया 'इस हाथ ले उस हाथ दे' के सिद्धांत पर ही चलती है, सो अब श्रीमती जी को वो फूटी आँख न सुहाता, लेकिन इससे मेरा शौक पूरा हो रहा था इसलिए मैं नजरअंदाज कर रहा था, फिर मेरी नजर उसके द्वारा भविष्य में दी जाने वाली मोटी रकम पर भी थी, सो नज़रअंदाज कर रहा था। मेरे बच्चे कुनमुनाते कि पापा हमलोगों को समय नहीं देते, केवल उसी के साथ लगे रहते हैं, आखिर उनके लिए चोकलेट, बिस्कुट और छोटे मोटे तोहफे आने भी तो बंद हो गए थे। मैंने उसे जो कुछ भी लिखकर दिया या उससे लिखवाया उसमें मनुष्य के अन्दर लालच, मुफ्तखोरी, और एहसान फरामोशी जैसे विषयों पर विशेष विवेचना की गई थी। इसके अलावा मनुष्य की कम समय और मेहनत में अधिकाधिक प्राप्त कर लेने की प्रवृति पर भी प्रकाश डाला गया था, और भी बहुत कुछ। इसके लिए मैंने ऑफिस के लाइब्रेरी से कई किताबें पढ़ीं, अखबारों के आर्टिकल काटकर इकट्ठे किये और इसके अलावा भी बहुत मेहनत किया। आखिर पी.एच.डी. का काम था तो मेहनत भी उसी स्तर की करनी पड़ती थी। लेकिन उसके बर्ताव से यही लगता था कि मैं छात्र हूँ और वह मेरा अध्यापक, जो मुझे पी.एच.डी. करवा रहा है, लेकिन अपने मजे में मैं सब कर रहा था।

हमलोगों का सब कुछ सुनिश्चित था। उसने किसी तरह जुगाड़ से शोध हेतु 'एंट्रेंस' पास कर लिया था। इसके अलावा हमने एक सस्ते से प्रोफेसर का भी जुगाड़ कर लिया था, जो कुछ पैसे लेकर अपने अन्दर शोधार्थी का पंजीकरण कर देता था और विश्वविद्यालय में प्रस्तुत भी कर देता था, हाँ इसके अलावा वह सिनोप्सिस आदि लिखवाने में कोई मदद नहीं करता था। शायद उसे कुछ आता जाता न था। खैर इससे हमें क्या लेना देना खासकर मुझे। बल्कि मैं तो खुश था, क्योंकि उसके हिस्से के पैसे मुझे जो मिलने वाले थे। उसे सिनोप्सिस भी मैंने ही लिखवाया था।

कुछ दिनों बाद उसने मेरे घर आना जाना छोड़ दिया। बुलाने पर कोई बहाना बना देता, चाय–नाश्ते और अच्छे भोजन का लालच भी उसे मेरे घर की ओर खींच नहीं पाया। अब मेरी परेशानी बढ़ गयी। एक दिन मैंने अचानक उसके घर पर धावा बोल दिया। मुझे अचानक देखकर पहले तो वो अचकचाया फिर दांत निपोड़ते हुए बोला –

"आइये मित्र आपका मुंह मीठा करवाऊं!

"किस खुशी में?" मैंने तल्ख लहजे में कहा।

"कल मेरे शोध का काम पूरा हो जाएगा"

"मेरे दिए गए विषय "मानव की प्रवृत्ति" पर?

"नहीं मनोहर लाल प्रोफेसर ने बहुत मेहनत से "मनुष्य की मनोवृत्ति" विषय पर शोध करवाया है। सिनोप्सिस आदि भी उन्हीं का है"

"और मेरा विषय"

"माफ करना मित्र मैं उससे नहीं कर पाया। उसे विश्वविद्यालय में मान्यता नहीं मिली"

अबतक मैं समझ चुका था कि ये सब उसके पैसे न देने के बहाने हैं। कुछ कहना बेकार था। मैंने घर की राह पकड़ी। लौट के बुद्धू घर को आए। घर आकर पत्नी ने जब जाना तो उसने लानत मलानत की सो अलग। खैर अब मुझे "मानव की प्रवृत्ति" का व्यवहारिक ज्ञान भी मिल गया था जो मेरा "भोगा हुआ यथार्थ" बन चुका था।

प्रशांत प्रखर,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जीवन का अर्थ

"प्रकृति" एक ऐसा शब्द है जिसका अर्थ बहुत विस्तृत होता है। संपूर्ण ब्रह्मांड में अनेक ग्रह एवं उपग्रह उपस्थित हैं। सभी की अपनी प्रकृति है। मनुष्य के निवास योग्य परिस्थिति अभी केवल पृथ्वी ग्रह पर ही मौजूद है। अभी तक ज्ञात वैज्ञानिक स्रोतों के अनुसार मनुष्य पृथ्वी पर लगभग 20 से 30 लाख वर्ष पहले से निवास कर रहा है। जब कोई मनुष्य इस धरती पर जन्म लेता है तो उसे कुछ पता नहीं होता है। जन्म के समय उसकी स्थिति ऐसी रहती है, जिसमें कुछ जानने या समझने की शक्ति नहीं होती है। धीरे–धीरे जब वह बड़ा होता है तो उसकी ज्ञान के साथ जिम्मेदारियाँ भी बढ़ती जाती हैं। एक समय ऐसा आता है कि वह जिम्मेदारियों के बोझ तले दब जाता है।

भाग–1

कमल का जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ था जो आर्थिक रूप से समृद्ध था। पिता विदेश की एक प्रतिष्ठित कंपनी में इंजीनियर के पद पर कार्यरत थे। माता गृहणी थीं और घर पर ही बच्चों का पालन–पोषण करती थी। पाँच सदस्यीय परिवार हंसी–खुशी जीवन व्यतीत कर रहा था। दो बड़ी बहनों में कमल घर का सबसे छोटा बच्चा था। भारतीय संस्कृति में हमेशा से परिवार में एकलौते पुत्र के मान–सम्मान का वर्चस्व रहा है, यद्यपि यह सही नहीं है। माता–पिता और बहनों के प्रेम से कमल हमेशा ओत–प्रोत रहता था। पिता किसी भी चीज की कमी नहीं होने देते। धीरे–धीरे कमल का बचपन व्यतीत होता गया। कमल का नामांकन क्षेत्र के एक प्रतिष्ठित विद्यालय में कराया गया। वह पढ़ाई करने लगा। वह कभी भी बहुत अच्छा विद्यार्थी नहीं रहा। एक औसत विद्यार्थी के रूप में

विद्यालय में उसे अध्यापकों द्वारा डांट भी पड़ती थी। लेकिन कमल को पढ़ाई में ज्यादा मन नहीं लगता था और वह जैसे–तैसे पढ़ाई करता रहा। कमल के घर पर सभी बात पता होते हुए भी कोई उसे पढ़ने के लिए नहीं डांटता था। डांटे भी कैसे कोई, कमल घर का जो इकलौता लड़का था। इसी बात का फायदा उठा कर वह अपने अनुसार कार्य करता रहा। पढ़ाई में वह कक्षा के दूसरे विद्यार्थियों से पिछड़ता गया। इन सबके बावजूद भी वह जो कुछ भी मांग करता था, उसे शीघ्र पूरा कर दिया जाता था।

कमल जब आठवीं कक्षा में प्रवेश किया तो उसकी मित्रता हरी से हुई। मित्रता इतनी प्रगाढ़ हो गई कि दोनों का शाम और सुबह एक साथ होने लगा। दोनों घर और विद्यालय में एक साथ ही रहते थे। मानो एक–दूजे के लिए ही बने हों। हरी एक गरीब परिवार का लड़का था। उसके पिताजी राजमिस्त्री का कार्य करते थे और सात सदस्यों वाले परिवार का भरण–पोषण करते थे। कमल विद्यालय में हमेशा पैसा लेकर जाता था, लेकिन हरी के पास पैसा नहीं होता था। दोनों में मित्रता इतनी गहरी थी कि, जो भी होता था एक साथ बाँट कर खाते थे। एक बार कमल अपने घर पर

साइकिल की इच्छा जताया। जब यह बात उसके पिता को पता चला तो उन्होनें बिना झिझक उसे एक साइलकिल दिला दी। कमल अब सातवें आसमान पर था। दोनों मित्र खूब साइकिल चलाते और जहां–तहां घूमते थे। उसी से विद्यालय भी चले जाते थे। छुट्टी के बाद अपने विद्यालय के मित्रों के गाँव भी घूम आते थे। इस प्रकार उनका दैनिक जीवन व्यतीत होने लगा। इसका प्रभाव उसके पढ़ाई पर भी पड़ने लगा। इसकी शिकायत विद्यालय द्वारा घर पर की गई। लेकिन उसका

कोई फायदा नहीं हुआ। कमल अपने कार्य में मशगूल रहा।

एक बार कमल और हरी अपने विद्यालय के एक मित्र के घर जा रहे थे। जाते वक्त रास्ते में कार से दुर्घटना हो गई। राहगीरों ने दोनों को पास के एक अस्पताल में भर्ती करा दिया और उनके घर पर सूचना दे दी। घरवाले सूचना पाते ही तुरंत अस्पताल पहुंचे। कमल का दाहिना पैर घुटने के ऊपर टूट गया था। वहीं हरी को बहुत कम चोट लगी थी। कमल के घर लगा दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। घर का इकलौता पुत्र था, इसलिए घरवालों को बहुत दुख था। महीनों तक इलाज होने के पश्चात कमल का पैर ठीक हो गया। लेकिन उसे अब अकेले कहीं जाने नहीं दिया जाता था। उसकी देख–रेख बहुत ज्यादा होने लगी। उसकी पढ़ाई भी जैसे–तैसे पूरी हुई। वह मैट्रिक की परीक्षा थर्ड डिवीजन से पास किया। दुर्घटना के पश्चात हरी, कमल से बहुत कम मिलता था। हरी भी अपनी पढ़ाई करता रहा और वह मैट्रिक करने के उपरांत आगे की पढ़ाई जारी रखा।

भाग–2

कुछ वर्षों बाद कमल अपना इंजीनिरिंग की पढ़ाई पूरा किया। अब कमल 21 वर्ष का हो गया था। उसके पिता जी उसे पासपोर्ट बनवाने के सलाह दिये। लेकिन कमल की मित्र मंडली अब बड़ी हो गयी थी। वह इधर–उधर घूमा करता था। कुछ दिनों के बाद पासपोर्ट बनवा दिया गया। वहीं, हरी अपनी साधारण स्नातक की पढ़ाई पूरी कर के सरकारी नौकरी की तैयारी करने लगा। हरी के पिता के पास पैसे थे नहीं कि वह कहीं बाहर जाकर परीक्षा की तैयारी करे। इसलिए वह घर पर ही रहने लगा और घर के काम के साथ–साथ अपनी तैयारी भी करता रहा।

कमल के पिता जी विदेश से जब घर आए तो कमल की हरकत को देखकर वह उसे अपने साथ ही ले जाने की योजना बनाए। कुछ महीनों बाद कमल अपने पिता के साथ विदेश चला गया। वहाँ कुछ समय व्यतीत करने के बाद वह घर वापस चला आया। उसके पिता परेशान थे। कमल अब किसी की भी बात नहीं सुनता था। उसे जो मर्जी होता, वही करता था। घर की स्थिति बिगड़ती गई। जल्द ही उसके बड़ी बहन की शादी हो गई। अब घर पर कोई ऐसा नहीं था जो उसे डांट सके। वह अपनी माँ की कभी नहीं सुनता था। उससे जो पंद्रह माह बड़ी बहन थी उसको तो वह

बात–बात में डांट देता था। कमल की आदत एकदम खराब हो गई थी। कुछ वर्षों बाद पिता घर आए तो उस बहन की भी शादी कर दिए। अब घर पर केवल तीन लोग थे। माता, पिता और कमल। कमल अब नशा भी करने लगा था। वह अपने गाँव में बदनाम हो गया था।

वहीं, हरी अपनी पढ़ाई जारी रखा। लेकिन उसके घर की आर्थिक स्थिति बहुत दयनीय थी। बड़ी बहनों की शादी की चिंता अब उसे भी होने लगी थी। इसलिए उसने अपने पिता की सहायता करनी चाही। वह अपने घर पर ही छोटे बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दिया। उससे जो भी पैसे मिलते, वह अपने पिता को दे देता। परिवार को थोड़ा सबल मिला। हरी पढ़ाई में अच्छा था परन्तु पैसे की कमी के कारण वह पिछड़ गया था। धीरे–धीरे वह दसवीं और बारहवीं के बच्चों को भी पढ़ाने लगा। उसकी आर्थिक स्थिति थोड़ी ठीक हुई। वह अपनी बड़ी बहनों की शादी कराता गया। कुछ समय बाद हरी अपने क्षेत्र का प्रसिद्ध शिक्षक बन गया। उसने पास के चौराहे पर एक कोचिंग क्लासेस खोल दिया। वह पढ़ाने के साथ–साथ अपनी पढ़ाई भी करता था।

दोनों मित्र अब बहुत कम मिलते थे। अपने–अपने कार्यों में व्यस्त हो गए थे। हरी की प्रतिष्ठा बढ़ती गई। कमल की आदत बहुत बिगड़ गई थी। वह एकदम गैर–जिम्मेदार व्यक्ति हो गया था। उसे अब किसी से कोई फर्क नहीं पड़ता था। वह हमेशा नशा में झूमता रहता था। अचानक एक दिन हरी की मुलाकात कमल से हुई। चौराहे पर हरी सब्जी खरीद रहा था। कमल वहीं एक दुकान के किनारे शराब पी रहा था। जब हरी को देखा तो छुपने लगा। लेकिन हरी ये सब देख रहा था। कमल अपने आप को हरी की नजरों से बचाने की कोशिश कर रहा था। लेकिन हरी जानबूझ कर कमल के पास चला गया। कमल अपना सर नीचे झुकाया था। वह कुछ नहीं बोल पा रहा था। हरी उसके कंधे पर हाथ रखते हुए बोला कि ये सब गलत काम है। क्यूँ करते हो ऐसा काम। और ये सब कहते हुए वह कमल को दुकान के आगे लेकर आया तथा उसके हाथ से शराब को फेंक दिया। कमल कुछ नहीं बोल पा रहा था। वह हरी के बातों के जवाब में केवल सर नीचे किए हुए हिला रहा था। हरी उसका सर ऊपर उठाते हुए बोला, मेरी तरफ देखते हुए बोलो की आज के बाद ये सब नहीं करोगे। कमल कुछ बोल नहीं पाया। वह केवल धीरे आवाज में कुछ बुदबुदा दिया। हरी कमल के पीठ पर थपथपाते हुए बोला, मेरे यार अब तो मेरी तरफ देख लो। कमल शर्म से अपना सर ऊपर नहीं उठा पा रहा था। बहुत दिनों बाद दोनों की मुलाकात हुई थी। कुछ समय बाद कमल हरी के तरफ देखते हुए बोला "यार मैं सबके लिए बहुत बुरा हो गया हूँ"। यह कहते हुए कमल की आँखें भर गईं। हरी भी भावुक हो गया और कमल को जोर से गले लगाते हुए बोला, यार अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा। तुम चाहो तो सबकुछ फिर से ठीक हो सकता है। वादा करो कि आज के बाद शराब

को हाथ भी नहीं लगाओगे। उस दिन के बाद हरी और कमल फिर से रोज मिलने लगे। पुरानी दोस्ती फिर से बहाल हो गई। कमल अपने मित्र की बात मान कर धीरे–धीरे गलत आदतों को छोड़ दिया।

भाग–3

मई महीने की सुबह थी। चिलचिलाती धूप सुबह में ही आ गई थी। हरी रोज की तरह आज भी अपने कोचिंग क्लासेस के लिए घर से चला गया। जब वह कोचिंग पढ़ा कर घर आ रहा था तो रास्ते में डाकिया मिला। वह बोला आपके नाम से कुछ आया है। हरी भी सोचने लगा क्या हो सकता है? हरी उस लिफाफे को लेकर घर चला आया। जब लिफाफा खोला तो उसमें नियुक्ति पत्र था। वह लगभग दो वर्ष पहले रेलवे में स्टेशन मास्टर पद के लिए परीक्षा दिया था। हरी का खुशी का ठिकाना नहीं था। वह यह खबर अपनी माँ को दिया। माँ बेहद खुश हो गई और खुशी से उनकी आँखें भर आईं। शाम को पिता जी काम से घर आए। यह सूचना मिलते ही उनका सीना गर्व से चौड़ा हो गया। कमल भी सूचना पाते ही हरी से मिलने चला आया। वह भी बहुत खुश था। यह बात क्षेत्र में आग की तरह फैल गई। अब हरी जहां भी जाता, उसे बहुत सम्मान मिलता था। कुछ समय पश्चात हरी नागपुर जाकर अपने पद पर ज्वाइन कर लिया।

इधर कमल अब अकेले पड़ गया। वह घर पर ही रहता था। घर पर केवल वह और उसकी माँ थी। उसकी दोनों बड़ी बहने कभी–कभी अपने मायके आ जाती थीं, तो घर में रौनक आ जाती थी। लेकिन उनके जाने के बाद घर में फिर अकेलापन जैसा माहौल हो जाता था। कमल अकेलेपन को दूर करने के लिए फिर से नशे की तरफ जाने लगा। वह पुनः अपनी आदतों के आगे मजबूर होता चला गया। अब वह शराब पीने लगा।

उसके माता–पिता को लगा कि शादी होने के बाद सुधार जाएगा। पिता घर आए और कमल की शादी करा दी। लेकिन कमल पर इसका बहुत असर नहीं हुआ। कुछ महीनों बाद कमल को एक पुत्र हुआ। उसकी जिम्मेदारी और बढ़ गई। कमल का जीवन जैसे–तैसे व्यतीत होता रहा। पिता जी कुछ दिन रहने के बाद विदेश चले गए।

हरी पंद्रह महीनों के पश्चात नागपुर से घर आया। अपने साथ घर के सभी सदस्यों के लिए कुछ–न–कुछ लेकर आया था। अगले दिन वह कमल से मिलने के लिए उसके घर चला गया। कमल की माँ से मुलाकात किया। कमल उस समय घर पर नहीं था। कमल की माँ आपबीती को हरी से सुना दी। और कही, बेटा अब तुम ही उसे सुधार सकते हो। हरी, कमल को ढूँढते हुए चौराहे के तरफ निकल गया। उसे पता था कि कमल कहाँ हो सकता है। वह शराब के दुकान के पास गया तो देखा, कमल वहीं पास के एक दुकान पर था। हरी को देखते हुए वह उठकर दूसरे तरफ जाने लगा। लेकिन हरी जल्दी–जल्दी उसके तरफ गया और उसे पकड़ लिया। हरी से कमल नजर नहीं मिला पा रहा था। हरी उसे अपने घर

लेकर आया और उसे मिठाई खिलाया। कुछ मिठाई भी कमल को दिया और बोला, घर जाकर सबको दे देना। हरी अपनी मित्रता का फर्ज अदा किया और कमल को बहुत समझाया। लेकिन इस बार ऐसा प्रतीत हो रहा था कि कमल पर इन सब बातों का कोई असर नहीं पड़ रहा।

अब हरी की छुट्टियाँ भी समाप्त हो रही थी। घर वाले हरी की शादी के लिए लड़की देख रहे थे। अनेकों रिश्ते हरी के लिए आ रहे थे। लेकिन हरी अभी शादी के लिए मना कर रहा था। वह सोच रहा था कि एक बड़ी बहन की शादी कर लूँ फिर मैं अपना कर लूँगा। हरी के पिताजी चाह रहे थे कि भाई और बहन की शादी एक ही समय कर दिया जाए। हरी की इच्छा के आगे किसी की भी नहीं चल सकी। वह बोला की बहन की शादी के बाद ही अपनी शादी करेगा। वह कमल से भी रोज मिलता रहा। उसको बहुत समझाता था। लेकिन कमल इस बार हरी के बातों को बहुत कम महत्व देता था। वह हरी से भी दूरी बनाने लगा था। हरी की छुट्टी समाप्त हो गई और वह नागपुर वापस चला गया। कमल को अब कोई रोक–टोक करने वाला नहीं था। उसका दिन शराब से शुरू होता था और शराब से ही खत्म होता था। वह शारीरिक रूप से बहुत कमजोर हो गया था। वह किसी की नहीं सुनता था। ऐसे ही उसका जीवन कटता रहा। वह पूरी तरह अपनी दुनिया में खो गया था।

भाग–4

एक दिन कमल रोज की तरह चौराहे पर अपनी दुनिया में मग्न था। उसे खबर मिली कि उसके पिता का कंपनी में एक्सिडेंट हो गया है। वह उस बात को बहुत गंभीरता से नहीं लिया। वह अपने कार्यों में मशगूल रहा। शाम को जब वह घर पहुंचा तो देखा कि दोनों बड़ी बहनें और दूसरे रिश्तेदार भी उसके घर आए हैं। तब उसे झटका–सा लगा। वह अपनी पत्नी से पूछा, पिता जी कैसे हैं? वह कुछ बोली ही नहीं। उसके आँखों में आँसू थे। कमल को वह देखती रही। कमल को जब रहा नहीं गया तो वह अपनी माँ के पास गया, जो एक कोने में उदास बैठकर सोच रही थी। माँ से बार–बार पूछने पर पता चला कि पिताजी आईसीयू में हैं। हालात बहुत गंभीर है। कोई भारी वजन का समान उनके ऊपर गिर गया है, जिससे उनकी रीढ़ की हड्डी और दोनों पैर टूट गये हैं। यह सुनकर उसे सदमा–सा लग गया। कमल खड़े–खड़े जमीन पर गिर गया। वह बेहोश हो गया। बहनें जल्दी से उसे संभाली। कमल को जब होश आया तो वह बहुत जोर–जोर से रोने लगा। वह अपनी माँ को गले लगा कर रोने लगा। माँ तो पहले ही सदमा में चली गई थी। कमल को उस दिन जीवन में ऐसा दुख पहुंचा, जिसकी वह कभी कल्पना भी नहीं किया था। परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट गया था। अब उस परिवार को कमल के सहारे ही जीवन व्यतीत करना था। सभी लोग कमल को बोले अपने आप को संभालो, अब तुम ही परिवार का खेवैया हो।

कमल अंदर से टूट गया था। पिता का

कंपनी इलाज कराई और कुछ महीनों बाद घर भेज दी। एक कहावत है कि "लंगड़े घोड़े रेस में नहीं दौड़ते"। वही हाल अब कमल के पिता की थी। कंपनी को उनसे हानि के अलावा कोई लाभ नहीं था। वह चलने–फिरने में भी दुश्वार थे। घर आने के बाद उनका इलाज यहीं होता रहा। कुछ समय के बाद वह लाठी के सहारे थोड़ा–बहुत चल लेते थे। उनकी अब ओ पहले वाली प्रकृति नहीं थी। एक समय आर्थिक रूप से समृद्ध परिवार अब आर्थिक तंगी से जूझ रहा था। तंगी इतनी की खाने के भी लाले पड़ने लगे। कमल को अब धीरे–धीरे स्वयं जिम्मेदारियों का एहसास होने लगा। वह कुछ समय बाद विदेश चला गया। क्यूँकि यहाँ उसको इतने पैसे नहीं मिलते थे, जिससे पिता का इलाज के साथ परिवार का भरण–पोषण भी किया जा सके। कमल अब पूरी तरह से परिपक्व हो गया था। प्रत्येक महीना घर पर पैसे भेज देता था। घर की हालात थोड़ी बहुत सुधरी ही थी कि एक दिन पिता की मृत्यु हो गई। स्थिति ऐसी बनी के कमल विदेश से अपने पिता के अंतिम संस्कार में घर भी नहीं आ सका। विदेशी कंपनी से अनुबंधित समय से पूर्व अपने खर्चे पर सफर करना पड़ता है। कमल जो पैसा कमाता था हर महीने घर भेज देता था। उसके पास पैसे नहीं थे कि वह घर आ सके। एकलौता पुत्र होकर भी अपने पिता को मुखाग्नि नहीं दे पाया। वह खुद को बहुत विवश समझ रहा था। वह चाह कर भी कुछ नहीं कर सका।

इस पृथ्वी पर मनुष्य का प्राणी के रूप में जन्म हुआ है तो उसका प्रकृति द्वारा कोई–न–कोई अर्थ भी निर्धारित किया गया है।

उदयभान विश्वकर्मा,
कनिष्ठ अनुवादक

पूर्वी क्षेत्र बैडमिंटन टूर्नामेंट 2025-26

डेंटल फ्लोस

अपने घर में मैं अपना इंपॉर्टेंस कभी कम नहीं होने देता, ऐसा दशरथजी मानते हैं और अपने मित्रों–संबंधियों को भी इसका आभास कराते रहते हैं। जब अतिशय इसकी पुनरावृत्ति हो जाती है तो एक–आध मित्र झुंझलाकर बोल भी देते हैं कि अरे भाई किसका महत्व अपने घर में नहीं होता और यह कौन–सी बड़ी बात है। खैर, अब दशरथजी के इंपॉर्टेंस की चर्चा करना लाजिमी है।

एक सरकारी दफ्तर में क्लर्क की नौकरी करने वाले दशरथजी के परिवार में उनके अलावा पत्नीजी, एक पुत्री तथा एक पुत्र हैं। पत्नी गृहिणी हैं और दोनों बच्चे अभी हाई स्कूल में पढ़ाई कर रहे हैं।

कहना नहीं होगा कि बच्चे युवा हो चुके हैं। पत्नीश्री यदा–कदा एहसास कराती हैं कि अब इस उम्र में हमेशा बच्चों जैसी उच्छृंखलता दिखाना सही नहीं। परन्तु महाराज (दशरथ) यह मानने को कतई तैयार नहीं। उनकी नजर में जहां कहीं कोई नई बात, कोई नई वस्तु हाथ लगी नहीं कि अपना इंपॉर्टेंस दिखाने के लिए अतिशय उत्सुक हो घर में बच्चों और पत्नीजी के सामने उसे बताने को तत्पर हो जाते और जब उन्हें पता चलता कि अरे, यह तो बच्चे पहले से ही जानते थे तो शर्म से झेंप जाते और यदा–कदा क्रोधित भी हो जाते। उसे मिनिमाइज करने के लिए पत्नीजी को आगे आना पड़ता, अब हमारा जमाना नहीं रहा जी। इंटरनेट, ए.आई. और चैट जीपीटी के जमाने वाली हैं आपकी संतान।

श्रीमतीजी बच्चों को भी समझाने की असफल कोशिश करतीं कि कभी तो पापा की मान रख लो। परन्तु बच्चे न तो बच्चे थे और न ही कोई धीर–गंभीर प्रौढ़, मां जो हमे पहले से पता है उसे कैसे मान लें। वह तो झूठ होगा न? हां अपने पिता के लज्जित हो जाने के बाद पुत्री को यह आभास जरूर होता कि अनजान बने रहने से शायद पापा खुश हो जाते। पर आगे भी बिना किसी बदलाव के ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति हो ही जाती।

वैसे नॉर्मल सिचुएशन में दशरथजी कदापि ऐसे नहीं हैं, पत्नी और बच्चों के साथ जब बैठते तो सहज भाव से बात होती। रसोई में क्या बनेगा, आज सब्जी झोर वाली बनती तो ठीक रहता। मुंहलगी उनकी सबसे प्यारी, परन्तु उसकी दृष्टि में ठीक न लगने पर डिसएग्री मोड में आ जाने वाली बेटी टोकती, पापा झोर क्यों बोलते हैं, ग्रेवी वाली भी तो कह सकते थे। सॉरी बेटा, अब ग्रेवी शब्द का ही यूज करूंगा, बिना किसी नाराजगी के बोलते। हां तो आज झोर... और फिर सॉरी कह ठठा देते। अबोध पुत्री बोलते – बोलते रह जाती कि आप नहीं सुधरेंगे पा.....पा.....। घर में कोई भी बात हो, किसी प्रकार की कठिनाई हो, बड़ी सहजता से लेते और उसे सुलझा भी लेते। परन्तु उनके पुरातन मन के किसी कोने में अधुना दिखने की चाह, कभी– कभी नॉर्मल स्थिति को एबनॉर्मल कर देती।

कहानी बस इतनी ही है और अब इसे खत्म भी करना है। परन्तु पिता–पुत्री के भावुक, परिमल और मीठे अंतर्द्वंद के साथ इसे खत्म करना

चाहूँगा।

हुआ यह कि फिर एक नायाब चीज महाराजजी के हाथ लगी, वह थी डेंटल फ्लोस। अरे भाई दांत खोदने वाली एक उपकरण जो प्रचलन में तो पहले से ही है परन्तु दुर्भाग्य से दशरथ महोदय को पहली बार दिखी। ऑफिस में अमरूद खाते समय उसका एक बीज महोदय के दांत में फंस गया और अतिशय दर्द होने लगा। उन्हीं के एक मित्र को इस कष्ट का पता चला और उन्होंने यह डेंटल फ्लोस लाकर उन्हें दिया और उसके इस्तेमाल से दाँत में फंसा बीज निकल गया। तत्क्षण उनके कष्ट का निवारण हो गया। फिर क्या था, उनके लिए अधुना उस उपकरण को ले वे घर आ गए। संयोग था कि मोबाइल फोन के दुष्प्रभाव से पूरे परिवार को एकाकी कर देने वाले इस कठिन समय में भी पत्नी, बेटी–बेटा एक साथ बैठे थे।

खुशी–खुशी महाराजजी अपनी बाजीगरी दिखाते हुए बंद मुट्ठी सबके आगे कर दिए। बताओ तो क्या है इसमें?

बेटी–बिना देखे कैसे बताएं पापा?

मेरा दावा है कि दिखा भी दूं तो तुमलोग बता नहीं पाओगे। गर्वित पिता मुस्कराए–इतनी नायाब चीज तुमलोग तो क्या, अपने पूरे गाँव में किसी ने नहीं देखा होगा।

आदतन मुँहलगी पुत्री मुँह खोल पड़ी– उफ, पहले दिखाइए तो। फिर पूरे गांव को चैलेंज कीजियेगा। पिता ने वही डेंटल फ्लोस आगे कर दिया और बेटी ठठाकर हंसने लगी– बस इस अदना डेंटल फ्लोस पर इतना गर्वित हो रहे हैं। बेटी के अट्टहास से बेचारे दशरथजी पहले तो शर्मिंदा हो गए और फिर आदतन क्रुद्ध भी।

भगवान तुम्हारे अंदर जरा भी तमीज नहीं दिए हैं। तेरे जैसे निष्ठुर लोग कभी संवेदित होंगे भी तो कैसे। क्रोध में उन्होंने रात का खाना भी नहीं खाया।

दूसरे दिन बेटी को इसका (खाना न खाने का) पता चला तो ग्लानि से भर गई। नाराज पिता को मनाने लगी, सच में मैं निष्ठुर हो गई हूं पापा, पर इस बार माफ कर दीजिए।

चलो जाओ यहां से। मुझे अपना काम करने दो। बेटी जितना मनाती, उतना ही वे क्रुद्ध हो जाते। सभी तुरुप के इक्के असफल साबित हुए।

तब पुत्री ने अंतिम ब्रह्मास्त्र चलाया और जोर–जोर से रोने लगी।

दशरथजी अपनी उस बिटिया, जिसे कभी न कभी पराई हो उनसे बिछुड़ जाना था, के आंसू देख द्रवित हो गए और स्वयं अश्रुजल बहाने लगे। अबोध बेटी अब अपने निष्कपट पापा के आंसू पोंछने लगी, अरे पापा, आप तो मुझसे भी ज्यादा बुद्धू हैं। और अब पूरा घर कहकहों से गुंजायमान था।

सुदूर नेपथ्य का नाटककार भी इस अबूझ खेल को देख आनंद विभोर हो रहा था।

श्रीराम पाण्डेय,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

खुश हैं लोग

जिसे जला जग दीपित होता
उसे बुझाकर खुश हैं लोग।
जिसे छिपाना श्रेयस्कर है
उसे छपाकर खुश हैं लोग।।

दान से बढ़ कर धर्म न कोई
कहते सारे वेद–पुराण
दायें से वितरण करना पर
बायाँ हाथ रहे अनजान
किन्तु बताशे बाँटे क्या
ऐलान कराकर खुश हैं लोग।
जिसे छिपाना श्रेयस्कर है
उसे छपाकर खुश हैं लोग।।

बूढ़ी माँ की भीगी पलकें
पल पल सहती है अपमान
लेकिन तस्वीरों में देखो
चरण पकड़ सुत बने महान
रिश्तों की गर्माहट को
बाजार बनाकर खुश हैं लोग।
जिसे छिपाना श्रेयस्कर है
उसे छपाकर खुश हैं लोग।।

होती बहस निरर्थक हर पल
मूल समस्या गौण हुई
केवल स्तुति गीत ध्वनित है
समालोचना मौन हुई
सुनने का सामर्थ्य नहीं
पर सुना सुना कर खुश हैं लोग।
जिसे छिपाना श्रेयस्कर है
उसे छपाकर खुश हैं लोग।।

आभा झा,
द्वारा–श्री अविनाश ठाकुर,
सहायक लेखा अधिकारी

स्मृति मंजूषा

खामोशी की चादर में सिसकती स्मृतियाँ
घाव बन जाती हैं कभी न बहने वाली
जो अवसाद का रूप ले लेती हैं
स्मृति मंजूषा को तोड़कर बाहर आने को व्याकुल ये स्मृतियाँ
जिसे अवचेतन मन भी नियंत्रित नहीं कर पाता
हृदय भक्षण को तैयार ये स्मृतियाँ
किसी बाज की तरह उड़ कर आती हैं
ये तो मांसाहारी होती हैं
स्मृतियों से मुक्ति का अनुरोध करता इंसान
कितना निरीह है ईश्वर के समक्ष
जब स्मृति मंजूषा के किसी कोने में चंचलता से भरा मन शांत हो जाये
जब हद पार करती पीड़ा लगाव, उम्मीद और मोह के बंधन से मुक्त हो जाये
जब घंटों की बातों का सार एकांत हो जाये
जब ना जाने की जिद लिए ये जिद्दी स्मृतियाँ
किसी कोने में दम तोड़ने लगें
ये आत्मसंबल, आत्मशक्ति, अंतर्ज्ञान का प्रतिबिंब हैं
स्मृतियों पर हावी शांत मन की विजय अग्रणी जीवन का आधार है।

सुनीता कुमारी,
लेखाकार

कार्यालय में आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह की झलकियाँ

सौगन्ध

मन में यह संकल्प लिए, अपनी मंजिल को पाना है।
विश्व पटल पर भारत का एक नया रूप दिखलाना है।।
साध लिया है, अपने लक्ष्य को, शिखर तक जोर लगाना है।
प्रगति पथ पर कदम बढ़ा कर एक नवभारत बनाना है।।
वैश्विक वैमनस्व के दावानल में, निरीह निर्दोष हैं झुलस रहे।
आतंक और हिंसा के दानव का, समूल विनाश कराना है।।
शांति अमन की धरती पर, लहलहाते प्रेम का बागीचा।
वसुधैव कुटुंबकम् का उद्घोष, पूरी दुनिया में फैलाना है।।
पार कर सभी बाधाओं को, एक नया मानचित्र बनाना है।
तोड़कर सारी जंजीरें, खुद अपनी तकदीर बनाना है।।
सूरज, चाँद, मंगल तक हमने, अपनी पहुँच बना ली है।
असंख्य भुजाओं की शक्ति से, विराट पहचान बनाना है।।
गाँधी के स्वदेश मंत्र से, आत्मनिर्भर हो चला है भारत।
गुणवत्तापूर्ण भारतनिर्मित से, जग को लोहा मनवाना है।।
मेहनत और कौशल के बल पर, स्वर्णिम युग, फिर लाएँगे।
तन मन सर्वस्व करके अर्पण, श्रेष्ठ राष्ट्र बनाना है।।
हद से भी ऊपर उठकर, दिव्य प्रकाश फैलाएँगे।
लिए प्रण, हम निकल पड़े हैं, एक इतिहास रचाना है।।
देश नहीं मिटने देंगे, हम देश नहीं झुकने देंगे,
ना शान पे आँच आने देंगे।
माँ भारती की सौगन्ध लिए, नया विकसित भारत बनाना है।।

अवध बिहारी सिंह,
सहायक लेखा अधिकारी

वो तेरी आँखें (गीत)

तरल खासकर स्नेहसलिल से,
खूब नजर की दो आँखें हैं!
कारी–कजरारी–मतवाली,
प्यारी वो तेरी आँखें हैं!!
मदिराक्षी सुरबाला जैसी,
हिरनी–सी तेरी आँखें हैं!
श्वेत–श्याम–रतनारी आँखें,
रंग बदलती दो आँखें हैं!!
दिल की शुचिता मुझको प्यारी,
श्वेत दिखी तेरी आँखें हैं!
बहुत खूब है रंग जमाती,
प्यारी वो तेरी आँखें हैं!!
रंग चुराने में माहिर जो,
चम्पा–सी तेरी आँखें हैं!
ना इससे बढ़ दुग्धधवलता,
झलक रही तेरी आँखें हैं!!
कान्हा की श्यामल छवि लेती,
राधा की सुन्दर आँखें हैं!
नैन–मटक्का खेला करती,
प्यारी वो तेरी आँखें हैं!!
बिन सुरमा की कितनी काली,
हरिदर्शन करती आँखें हैं!
प्रेम किया राधा ने हरि से,
सो छवि की स्नेहिल आँखें हैं!!
बहुत खफा मुझसे जो होती,
रतनारी वैसी आँखें हैं!
जो राधारमणी की आँखें,
प्यारी वो तेरी आँखें हैं!!

पूर्णेन्दु कुमार झा,
द्वारा–श्री अविनाश कुमार ठाकुर,
सहायक लेखा अधिकारी

श्रीहरि कृपा

मुझ दीन पर इतनी कृपा करना
अपनी शरण से कभी न जुदा करना।

सुख आते ही भूल जाते हम तुम्हें
मुझ पर दया कर यदा–कदा दुख भेज ही देना।

दुख यानि याद, अखंड स्मरण तुम्हारा
भक्त के लिए तो सर्वोपरि है अपने इष्ट का चिंतन।

जब स्वयं अपना इष्ट समक्ष हो तो
सांसारिक सुख की लालसा क्यों?
असाध्य से साध्य की अभिलाषा क्यों?
इसी कारण तेरा शाश्वत सान्निध्य प्राप्त हो ।

दुख हरिप्रेम को प्रगाढ़ करता,
क्षुद्रता त्यागकर मन को साफ करता।

सुख तो बिन्दु है जिसकी नहीं होती कोई सीमायें,
ऐसा सतही जीवन किस काम का।

दुख लाता गहराई, आँखों में, जीवन में
दुख माँजता है, निखारता भी है,
आत्मचिंतन को प्रेरित करता।

मुझ दीन पर इतनी कृपा करना,
अपनी शरण से कभी न जुदा करना।

स्वाति कुमारी,
सहायक लेखा अधिकारी

ग़ज़ल

जिंदगी कट जाएगी चलते रहो आराम से
बस सफर में रक्खो मतलब सिर्फ अपने काम से

मेरी जानिब प्यार से देखा जो उसने बज्म में
आज कल जलने लगे हैं लोग मेरे नाम से

जब कभी गुजरूँ गली से तेरा हो दर्शन मुझे
मेरी खातिर तेरी चौखट कम नहीं है धाम से

गर मेरी हाथों की रेखाओं में तू शामिल नहीं
तू इशारा दे तो तुझको माँग लूँ मैं राम से

ये जबाँ कट जाए या फिर सर करे कोई कलम
प्यार जो करते हैं कब डरते हैं वो अंजाम से

साहिबे मसनद को बस मसनद से ही मतलब रही
इनको मतलब कब रहा है देश के आवाम से

तुम जरा बेचैन हो के हम जरा बेताब से
यूँ मलक मिल जाएँ राधा ज्यूँ मिली थी श्याम से

राम सिंगार चौहान,
सहायक लेखा अधिकारी

मेरे गाँव की कविताएँ

मेरे गाँव में बहुत कुछ बदल गया है
बदल गया है कुआँ
बदल गया है चौपाल
बदल गई है हवा
और बदल गई है नदी
जो पास में बहा करती थी
बदल गई है कबड्डी
बदल गया है चिक्का
बदल गया है दोलहा–पाति
बदल गया है सब–कुछ
बच्चों की किलकारियाँ भी बदल गई है
गीत–गवनई के स्वर भी बदल गये हैं
झूमर और चैता की लय बदल गई है
और तो और भिखारी ठाकुर की परंपरा भी
बदल गई है
जिसके विरुद्ध संघर्ष किए थे
भिखारी ने
बहुत कुछ बदल गया है, पर गाँव ने अपना
अपना नाम नहीं बदला
अपना नाम नहीं बदल देते हैं
या जबरन बदलवा दिये जाते हैं
आज भी बभनटोली है, मुसहरटोली है
चमरटोली और मियांटोली है
नाम वही है, नहीं बदलती इसकी गंध
न ही इनके धरोहरें
पर, बदल रहा है मेरा स्वभाव
कि मैं अब गाँव का नहीं हूँ
अपने गाँव में रहते हुए भी या नहीं रहते हुए
अपने गाँव से कोसों भाग रहा हूँ
कि कोई मुझे गवारु न समझे
किसी महानगर के रसीले सपने में तैर रहा हूँ
जहां केवल धुआँ ही धुआँ है

आफताब अंसारी,
सहायक पर्यवेक्षक

समय

समय है बलवान,
समय का करना चाहिए सम्मान,
जो किया इसकी पूजा वो बना महान,
समय है बलवान।
समय है बलवान,
वो चाहे तो गरीबों को बना दे धनवान,
समय किसी के लिए नहीं रुकता,
न समय कभी भी थकता,
क्योंकि समय है बलवान।
समय है बलवान,
उसे कोई नहीं रोक सकता,
न तो दानव न तो भगवान,
क्योंकि समय है बलवान।
समय है बलवान,
समय सबका आता है,
समय सबका जाता है,
पर इसे कोई नहीं रोक पाता है,
क्योंकि समय है बलवान।
समय है बलवान,
समय है महान,
समय है सर्वशक्तिमान,
समय है निष्ठावान, समय है दयावान,
क्योंकि समय है बलवान।
समय है बलवान,
इसलिए सभी लेते हैं इसका नाम,
बहुत कम ही समझ पाते क्या है इसका काम,
क्योंकि समय है बलवान।
समय है बलवान,
इसे कोई भी खरीद नहीं पाया है,
इसकी पहचान,
क्योंकि समय है बलवान।

रिशु सिन्हा,
पुत्र- कुमारी संगीता सिन्हा,
सहायक पर्यवेक्षक

कार्यालय में आयोजित लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह की झलकियाँ

बिहार का सिंघाड़ा (पानीफल)